समय बदल सकता है सब कुछ
लेकिन कुछ सवाल, कभी हल नहीं होते।

समय के दर्शन

एक रहस्य... तीन काल... एक भाग्य

नंदकिशोर चौधरी

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Nandkishor Chaudhary 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-389-2

Cover Design: Sharvi Singh
Typesetting: Sagar

First Edition: October 2026

जब मैं इस कहानी को लिखने का विचार कर रहा था, तब मुझे एक विचित्र स्वप्न आया। उस स्वप्न में मैंने तीन व्यक्तियों को देखा। तीनों की आयु अलग-अलग थी, किंतु उनके चेहरे एक-दूसरे से बिल्कुल समान थे। वे तीनों आपस में संघर्ष कर रहे थे। उसी स्वप्न ने मेरे मन में इस कहानी का बीज बो दिया।

उसके बाद मैंने समय-यात्रा पर गंभीर शोध किया। अनेक पुस्तकें पढ़ीं, अनेक फ़िल्में देखीं और विभिन्न वैज्ञानिक तथा दार्शनिक सिद्धांतों का अध्ययन किया। तब जाकर मैंने इस कहानी की रचना की। इस कथा का आधार तीन प्रमुख पैराडॉक्स और दो प्रभाव (इफेक्ट) हैं, जिनके इर्द-गिर्द पूरी कहानी बुनी गई है।

मेरा व्यक्तिगत मत यह है कि यदि मनुष्य कभी समय में पीछे जा भी सके, तो संभव है कि वह वहाँ किसी जीवित संसार में नहीं, बल्कि समय के एक स्थिर अभिलेख के बीच पहुँचे। जिस प्रकार हमारी पुरानी तस्वीरें हमारे भूतकाल का प्रतिनिधित्व करती हैं, उसी प्रकार अतीत भी एक स्थिर रिकॉर्ड हो सकता है। यदि वह तस्वीर फट जाए या जल जाए, तो हमें पीड़ा नहीं होती, क्योंकि वह केवल हमारा प्रतिबिंब है, स्वयं हम नहीं।

इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य भविष्य में जाने का प्रयास करे, तो संभव है कि वहाँ उसके अस्तित्व का कोई निश्चित बिंदु ही न हो, क्योंकि भविष्य अभी बना ही नहीं है। मेरे विचार से भविष्य कोई निश्चित स्थान नहीं, बल्कि संभावनाओं का क्षेत्र है। जब वह घटित होता है, तभी वर्तमान बनता है, और वर्तमान बीतते ही भूतकाल में परिवर्तित हो जाता है।

इसी कारण मुझे लगता है कि वास्तविक अर्थों में केवल दो ही काल हैं—भूतकाल और वर्तमान। भविष्य अपने आप में कोई निश्चित काल नहीं, बल्कि कल्पनाओं, संभावनाओं और प्रायिकताओं का विस्तार है।

गणित में एक अध्याय होता है—प्रायिकता (Probability)। प्रायिकता किसी घटना के होने या न होने की संभावना बताती है। वह भविष्य का निश्चित ज्ञान नहीं देती, बल्कि केवल संभावित परिणामों का अनुमान प्रस्तुत करती है। कभी-कभी किसी व्यक्ति का अनुमान सही सिद्ध हो जाता है और लोग उसे भविष्यवाणी मान लेते हैं, जबकि वह केवल एक संभावना होती है।

यदि कभी वास्तविक अर्थों में समय-यंत्र का निर्माण हुआ, तो मेरा मानना है कि वह हमें भूतकाल तक तो ले जा सकता है, क्योंकि भूतकाल घटित होकर एक निश्चित अभिलेख बन चुका है। किंतु यदि वह हमें भविष्य में ले जाए, तो यह भी संभव है कि हम अपने वर्तमान समय से सदा के लिए विलुप्त हो जाएँ, क्योंकि भविष्य अभी निश्चित रूप से अस्तित्व में आया ही नहीं है।

एक संभावना यह भी है कि यदि कोई व्यक्ति वर्तमान से भूतकाल में जाए, तो वह वहाँ के लोगों को अपने वर्तमान तक की घटनाएँ बता सकता है। उनके लिए वह भविष्य होगा, जबकि उसके लिए वह अतीत होगा। इस प्रकार समय की धारा एक नए दृष्टिकोण से दिखाई देने लगती है।

“समय नदी की तरह नहीं, बल्कि स्वयं को संतुलित रखने वाली धारा है। तुम उसके प्रवाह में एक क्षणिक लहर पैदा कर सकते हो, लेकिन उसका अंतिम मार्ग नहीं बदल सकते। यदि तुम छत्रपति शिवाजी महाराज

और अफ़ज़ल ख़ान के युद्ध में पहुँच भी जाओ और एक पल के लिए इतिहास बदलता हुआ दिखाई दे, तो अगले ही क्षण समय स्वयं को ठीक कर लेगा। अंत वही होगा जो इतिहास में लिखा जा चुका है। यही Novikov Self-Consistency Principle है।“

मेरी कल्पना में भविष्य की रेखा अनंत है। वह निरंतर आगे बढ़ती रहती है और उसका कोई अंतिम बिंदु दिखाई नहीं देता। किंतु जब उसी समय को वर्तमान से भूतकाल की ओर देखा जाता है, तो वह एक पूर्ण कालचक्र का रूप ले लेता है।

“इस उपन्यास में प्रस्तुत समय-यात्रा के विचार स्थापित वैज्ञानिक तथ्यों का दावा नहीं करते। ये विभिन्न वैज्ञानिक और दार्शनिक सिद्धांतों से प्रेरित एक काल्पनिक परिकल्पना हैं। मेरा यह मत नहीं है कि भविष्य का अस्तित्व निश्चित रूप से नहीं है, बल्कि केवल इतना है कि प्रायिकता के सिद्धांत के आधार पर ऐसा संभव भी हो सकता है और नहीं भी। यही अनिश्चितता इस कहानी की कल्पना को जन्म देती है। आगे की कथा में आप देखेंगे कि यदि इन संभावनाओं को सत्य मान लिया जाए, तो समय किस प्रकार स्वयं को संतुलित रखता है।“

एक विश्वविद्यालय और उसके आसपास विद्यार्थियों की काफी चहल-पहल थी, क्योंकि वहाँ एक महा प्रतियोगिता आरंभ हो चुकी थी। इस प्रतियोगिता में चयन होने के बाद विद्यार्थियों का भविष्य पूरी तरह बदल सकता था। अनेक विद्यार्थी इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए अपने साम, दाम, दंड और भेद—अर्थात् अपनी समस्त योग्यताओं, बुद्धिमत्ता और सीखी हुई हर शिक्षा का प्रयोग कर रहे थे।

परीक्षा आरंभ होते ही एक लड़का अपनी कक्षा से निकलकर तेजी से शौचालय की ओर भागता है। उसे विश्वास था कि वहाँ उसने कोई महत्त्वपूर्ण वस्तु छिपाकर रखी थी, जो परीक्षा में उसकी बहुत सहायता कर सकती थी। वह उसे खोजने का भरसक प्रयास करता है, किंतु अनेक प्रयासों के बाद भी वह वस्तु उसे नहीं मिलती।

घबराकर वह विद्यालय के बाहर दौड़ पड़ता है। वह हर कोने में, हर व्यक्ति से उस वस्तु के बारे में पूछता है कि कहीं किसी को वह मिली तो नहीं। किंतु आसपास का कोई भी व्यक्ति उस वस्तु के बारे में कुछ नहीं जानता था। वह लड़का अत्यंत निराश और व्याकुल हो जाता है। स्वयं को कोसते हुए वह यह मान बैठता है कि अब वह इस परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाएगा। यही विचार उसके मन पर गहराई से छा जाता है।

तभी उसके जीवन में आशा की एक किरण दिखाई देती है।

एक रहस्यमय व्यक्ति, जिसने अपने पूरे शरीर को भारी-भरकम कंबल से ढक रखा था और अपना चेहरा भी छिपा रखा था, उसके पास आता है। वह धीमे स्वर में कहता है, “सुनो, धीरेंद्र! मैं तुम्हें यह देता हूँ।“

धीरेंद्र उस घड़ीनुमा वस्तु को देखकर कहता है, "यह वह वस्तु नहीं है, जिसे मैं ढूँढ़ रहा हूँ।"

रहस्यमय व्यक्ति मुस्कराकर कहता है, "जिसे तुम आज अपना नहीं मान रहे हो, कल उसी के लिए सबसे अधिक परेशान हो जाओगे।"

धीरेंद्र वह वस्तु ले लेता है और सोचता है, "यह क्या है, मुझे नहीं पता; लेकिन शायद यह मेरे लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यदि यह इस परीक्षा में मेरी थोड़ी-सी भी सहायता कर दे, तो यही बहुत होगा।" फिर वह उस व्यक्ति की ओर देखकर कहता है, "मुझे यह घड़ी देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

इसके बाद वह पुनः विद्यालय के शौचालय में जाता है और उस रहस्यमयी घड़ी का उपयोग करता है। घड़ी उसे परीक्षा के समय से बारह घंटे पीछे ले जाती है। वह मध्यरात्रि में अपने कमरे में पहुँच जाता है, अपनी पुस्तक खोलता है और उन प्रश्नों पर निशान लगाने लगता है, जिन्हें उसने भविष्य में परीक्षा-पत्र में देखा था। इसके पश्चात वह वर्तमान समय में लौट आता है और परीक्षा में पूछे गए सभी प्रश्नों के उत्तर सहजता से लिख देता है।

अध्याय – 2

वर्ष : 2027

दृश्य एक प्रतिष्ठित संस्थान के प्रांगण का है, जहाँ कभी एक महत्त्वपूर्ण प्रतियोगिता आयोजित हुई थी। किंतु अब समय बदल चुका है। आज उसी संस्थान में एक भव्य विज्ञान प्रदर्शनी (Science Exhibition) का आयोजन किया गया है। देश-विदेश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक अपने-अपने हैरतअंगेज़ आविष्कारों का प्रदर्शन करने आए हैं।

कहते हैं, "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।" मनुष्य की आवश्यकताएँ जैसे-जैसे बढ़ती जाती हैं, वैसे-वैसे नए-नए आविष्कार जन्म लेते हैं। प्रदर्शनी में ऐसे अनेक आधुनिक यंत्र प्रदर्शित किए जा रहे थे, जिन्हें अधिकांश लोगों ने पहले कभी नहीं देखा था। विदेशों से आए वैज्ञानिक भी अपने अद्भुत आविष्कारों से सभी को आश्चर्यचकित कर रहे थे।

इन्हीं प्रदर्शनों के बीच एक प्रदर्शनी ऐसी भी थी, जिसकी चर्चा पूरे संस्थान में हो रही थी। उस प्रदर्शन का संचालन भारतीय वैज्ञानिक दर्शन कुमार कर रहे थे। पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने घोषणा की—

“मेरा यह यंत्र एक समय-यंत्र (Time Machine) है, जिसकी सहायता से कोई भी व्यक्ति कुछ समय के लिए अतीत में जा सकता है।“

यह सुनते ही वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति उस यंत्र को देखने के लिए उत्सुक हो उठा। कुछ ही क्षणों में दर्शन के स्टॉल के चारों ओर भारी भीड़ एकत्र हो गई।

उसी समय संस्थान के चेयरमैन, डायरेक्टर, मैनेजिंग डायरेक्टर तथा सीईओ भी वहाँ पहुँचते हैं। संस्थान का डायरेक्टर दर्शन को भली-भाँति जानता था। वह वही युवक था, जिसने दस वर्ष पहले हुई प्रतियोगिता में रहस्यमयी घड़ी की सहायता से सफलता प्राप्त की थी।

दर्शन अपने समय-यंत्र का प्रदर्शन आरंभ करता है। वह एक राजमा का बीज उठाकर मशीन के समीप रखता है। देखते ही देखते समय-यंत्र उस बीज को अपने भीतर खींच लेता है और वह बीज सबकी आँखों के सामने गायब हो जाता है।

दर्शन का यह प्रदर्शन देखकर उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

मैनेजिंग डायरेक्टर धीरेंद्र, जो दर्शन को पहले से जानता था, चुनौतीपूर्ण स्वर में पूछता है—

“हमें कैसे विश्वास हो कि आपकी यह मशीन वास्तव में समय-यंत्र है? आप इसे कैसे सिद्ध करेंगे?”

दर्शन शांत स्वर में उत्तर देता है—

“मेरे पास इतना धन नहीं था कि मैं एक पूर्ण विकसित समय-यंत्र बना पाता और आपको स्वयं अतीत में भेजकर उसका प्रमाण दे सकता।“

दर्शन का उत्तर सुनते ही धीरेंद्र क्रोधित हो उठता है। वह बोर्ड के अधिकारियों की ओर देखकर कहता है—

“सर, मुझे लगता है कि यह हमसे धन प्राप्त करने के लिए केवल भ्रम पैदा कर रहा है, ताकि हमें लगे कि हमने सही परियोजना में निवेश किया है। किंतु मुझे विश्वास नहीं कि इसे धन देना उचित होगा।“

धीरेंद्र की बात सुनकर दर्शन कुछ क्षण मौन रहता है। फिर वह दृढ़ स्वर में कहता है—

“देखो, धीरेंद्र! मैं तुम्हारी तरह अवसरवादी नहीं हूँ। तुम इस मशीन का ब्लूप्रिंट प्राप्त करना चाहते हो, ठीक वैसे ही जैसे दस वर्ष पहले तुमने मेरे साथ छल किया था। तुम्हारे पास धन है और उस ब्लूप्रिंट के आधार पर तुम स्वयं यह मशीन बनवा सकते हो।“

वह आगे कहता है—

“यदि बोर्ड के सदस्यों को मुझ पर थोड़ा-सा भी विश्वास है, तो मुझे केवल एक अवसर दें। मैं इस समय-यंत्र को पूर्ण रूप से बनाकर उसका परिणाम आपके सामने प्रस्तुत कर दूँगा।“

धीरेंद्र तुरंत उत्तर देता है—

“सर, इसे केवल धन चाहिए। मुझे नहीं लगता कि यह उस धन का उपयोग समय-यंत्र बनाने में करेगा। यह धन अपने निजी कार्यों में खर्च कर देगा और बाद में कह देगा कि परियोजना असफल हो गई। इस प्रकार हमारे सारे पैसे व्यर्थ चले जाएँगे।“

दोनों के बीच चल रही तीखी बहस का सीधा प्रसारण समाचार चैनलों पर किया जा रहा था। स्थिति को देखते हुए वरिष्ठ अधिकारी भी चिंतित हो उठे।

तभी बोर्ड के एक वरिष्ठ सदस्य ने कहा—

“इस परियोजना पर तुम दोनों मिलकर कार्य करोगे। धीरेंद्र, परियोजना के लिए जितना भी धन स्वीकृत होगा, उसका पूरा हिसाब और प्रत्येक व्यय का प्रमाण-पत्र तैयार करके बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत करोगे। साथ ही, इस परियोजना की निगरानी भी तुम्हीं करोगे।“

यह सुनते ही दर्शन क्रोधित हो गया। उसने बोर्ड के सदस्यों से कहा—

“सर, आवश्यकता पड़ी तो मैं इस मशीन को आग लगा दूँगा, लेकिन धीरेंद्र के साथ काम कभी नहीं करूँगा। आज यह जिस पद पर बैठा है, उस स्थान का वास्तविक अधिकारी मैं था।“

बैठक समाप्त होने के बाद दर्शन अपने मित्रों और सहयोगियों के साथ संस्थान की छत पर बैठकर शराब पी रहा था।

दर्शन का मित्र मयंक उसे समझाते हुए बोला—

“देखो, दर्शन! दस वर्ष पहले जो भी हुआ हो, लेकिन आज धीरेंद्र हमारा मैनेजिंग डायरेक्टर है। उस समय तुमसे क्या गलती हुई थी, यह हमें नहीं पता। किंतु आज तुम जो कर रहे हो, वह निश्चित रूप से गलत है। बिना किसी कारण तुम धीरेंद्र से टकराव मोल ले रहे हो।“

दर्शन अपने मित्र को चुप रहने का संकेत देता है और कहता है—

“तुम नहीं जानते, मयंक! इस आदमी की वजह से मैं पिछले दस वर्षों से कष्ट झेल रहा हूँ। मैं जीवन की कितनी भी लड़ाइयाँ जीत लूँ, लेकिन इसकी शक्ल देखते ही स्वयं को हारा हुआ महसूस करने लगता हूँ।“

इतना कहकर दर्शन अपने हाथ में जाम उठाता है और छत की ऊपरी मंज़िल की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ चढ़ने लगता है।

जब वह छत का दरवाज़ा खोलता है, तो वहाँ कोई दिखाई नहीं देता। वह मन ही मन सोचता है—

“अच्छा है, अब शांति से अपना जाम पी सकूँगा।“

लेकिन तभी उसके पीछे से एक गंभीर आवाज़ सुनाई देती है—

“दर्शन, क्या तुम्हें सचमुच लगता है कि मैं आज जो जीवन जी रहा हूँ, वह तुम्हारी गलती की वजह से जी रहा हूँ?”

दर्शन कुछ क्षण मौन रहता है। वह धीरेंद्र के इस प्रश्न का उत्तर देना नहीं चाहता।

कुछ पल बाद धीरेंद्र वही प्रश्न दूसरी बार दोहराता है । अब दर्शन कहता है—

“हाँ! यदि मैं उस परीक्षा में बैठता और सफल हो जाता, तो तुम्हें तुम्हारी औकात दिखा देता। तुम्हें उसी फर्श पर लाकर खड़ा करता, जिसके तुम वास्तव में योग्य थे। तब भी तुम मुझसे जलते थे और आज भी मुझसे जलते हो।“

दर्शन का घर

दर्शन अपनी कार्य-क्षेत्र की दुनिया में जितना सफल था, अपने घर-परिवार में उतना ही असफल और दुःखी था।

उसके घर में उसके वृद्ध माता-पिता, उसकी गर्भवती पत्नी और उसकी सास रहती थीं।

दर्शन के माता-पिता अलग भोजन बनाते थे, जबकि उसकी पत्नी और सास अलग भोजन बनाती थीं। विडंबना यह थी कि रसोईघर एक ही था, फिर भी दोनों पक्ष किसी-न-किसी बात पर आपस में झगड़ते रहते थे। घर में लगभग हर घंटे किसी न किसी कारण से विवाद हो जाता था।

दर्शन को अपना घर बोझ-सा लगने लगा था। उसका घर लौटने का बिल्कुल मन नहीं करता था। वह अधिक से अधिक समय घर से बाहर ही बिताना चाहता था। जब भी वह घर आता, एक ओर उसकी माँ और पिता अपनी बहू की शिकायत करते, तो दूसरी ओर उसकी पत्नी और सास उसके माता-पिता की शिकायतें लेकर बैठ जातीं।

पूरा घर एक भयावह खामोशी और तनाव से भरा रहता था। इसी बीच उसकी पत्नी दो-तीन महीनों बाद माँ बनने वाली थी, इसलिए दर्शन उसका विशेष ध्यान रखता था।

घर की स्थिति देखने और भोजन करने के बाद वह अपनी प्रयोगशाला में चला जाता। वहाँ पहुँचकर वह एक गहरी साँस लेता और मुस्कुरा उठता, मानो उसने अपनी सारी परेशानियाँ प्रयोगशाला के बाहर ही छोड़ दी हों। वहाँ केवल वह और उसका अकेलापन था, और दोनों ही एक-दूसरे के साथ सहज महसूस करते थे। उसे वहाँ से बाहर जाने की बिल्कुल इच्छा नहीं होती थी।

उसकी प्रयोगशाला में एक डायरी रखी रहती थी। वह प्रतिदिन अपने सभी प्रयोगों का विवरण उसी डायरी में लिखता था। डायरी के अंतिम पृष्ठ पर एक पुरानी तस्वीर लगी हुई थी। वह किसी युवती की तस्वीर थी। दर्शन उसे बड़े ध्यान से निहारता, फिर उसी से बातें करने लगता। वह पूरे दिन की घटनाएँ उस तस्वीर में मौजूद लड़की को सुनाता, जिसका नाम मीरा था।

एक दिन बातें करते-करते उसी डायरी में से एक छोटा-सा लिफाफा नीचे गिर पड़ा। दर्शन ने उस पत्र को ध्यान से देखा। उसमें कई जटिल सूत्र लिखे हुए थे। उसने उन सभी सूत्रों को चार्ट-पेपर पर उतारना शुरू किया। जैसे-जैसे वह उन्हें समझने लगा, उसके चेहरे के भाव बदलते गए। अंततः वह अपना माथा पकड़कर बैठ गया।

उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसने कभी ऐसा सूत्र भी बनाया होगा। वह सूत्र समय-यंत्र का था। यदि उसे सही ढंग से तैयार कर लिया जाए, तो उसके माध्यम से समय में आगे और पीछे दोनों दिशाओं में यात्रा की जा सकती थी।

दर्शन यह सोचकर हैरान था कि उसने यह सूत्र कब और कैसे बनाया। यह अपने समय से कई वर्ष आगे की तकनीक प्रतीत हो रही थी।

कुछ देर बाद उसने अपना माथा उठाया और अपने द्वारा बनाए गए छोटे समय-यंत्र की तुलना उस सूत्र से करने लगा। उसे विश्वास होने लगा कि यही वह सूत्र है, जिसकी उसे वर्षों से तलाश थी।

उसने उस सूत्र का उपयोग अपने समय-यंत्र में किया। कुछ ही क्षणों में मशीन के भीतर एक प्रबल ऊर्जा उत्पन्न होने लगी। धीरे-धीरे वह ऊर्जा

एक रहस्यमयी द्वार का रूप लेने लगी। दर्शन ने उस द्वार को “पोर्टल” नाम दिया।

वह पोर्टल अपने एक मीटर के दायरे में आने वाली प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचने लगा। आश्चर्य की बात यह थी कि उसके दूसरी ओर से किसी बाज़ार और दुकानदारों की आवाज़ें भी सुनाई दे रही थीं।

दर्शन उस पोर्टल के भीतर जाना चाहता था, किंतु उसे यह बिल्कुल पता नहीं था कि वह वापस कैसे लौटेगा।

कुछ क्षण सोचने के बाद उसने अपनी घड़ी की ओर देखा और बिना किसी हिचकिचाहट के उस पोर्टल में छलाँग लगा दी।

जैसे ही वह पोर्टल के भीतर पहुँचा, उसे ऐसा लगा मानो वह किसी घूमती हुई सुरंग में फँस गया हो। वह उलटता-पलटता, इधर-उधर टकराता हुआ अंततः एक बनिए की राशन की दुकान में रखे राजमा के बोरे पर जा गिरा।

यह वही समय था, जब संस्थान में विज्ञान प्रदर्शनी चल रही थी और दर्शन ने अपने सहयोगी को राजमा लाने के लिए भेजा था।

दुकानदार ने चारों ओर बिखरे हुए राजमा को देखा तो वह गुस्से से चिल्लाने लगा। दर्शन तुरंत हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगा और तेजी से बिखरे हुए राजमा समेटने लगा।

उसी समय उसने देखा कि उसका सहयोगी भी राजमा खरीदने के लिए दुकान की ओर आ रहा है।

सहयोगी ने दुकान की अस्त-व्यस्त स्थिति देखकर बनिए से पूछा, “यह सब क्या हुआ?”

बनिए ने जल्दी-जल्दी राजमा समेटते हुए कहा, “बाबूजी, अभी आप यहाँ से चले जाइए।“

सहयोगी ने अधिक ध्यान नहीं दिया और वहाँ से चला गया।

दर्शन तुरंत अपने घर की ओर भागा। जैसे-तैसे वह घर पहुँचा। वहाँ फिर वही सास-बहू के झगड़े चल रहे थे। उसने उन बातों पर ध्यान नहीं दिया और सीधे घर के पीछे स्थित अपनी प्रयोगशाला में पहुँच गया।

वहाँ उसने फिर से डायरी निकाली, पत्र में लिखे सूत्रों का उपयोग किया और समय-यंत्र को दोबारा सक्रिय किया। इस बार वह समय की धारा में आगे बढ़ते हुए सुरक्षित अपने वास्तविक समय में वापस लौट आया।

आज दर्शन अपने घर सामान्य दिनों की अपेक्षा जल्दी लौट आता है, क्योंकि उसके साले ने उसके पिता पर हमला कर दिया था। इस घटना से दर्शन अत्यंत क्रोधित हो जाता है और अपने साले को तुरंत घर से बाहर निकल जाने के लिए कह देता है।

दर्शन का यह निर्णय उसकी पत्नी को बिल्कुल पसंद नहीं आता। वह चाहती थी कि दर्शन अपने माता-पिता को घर से बाहर जाने के लिए कहे, लेकिन दर्शन ऐसा करने से साफ़ इंकार कर देता है।

क्रोध में अंधी होकर उसकी पत्नी अपने गर्भ में पल रहे बच्चे की भी परवाह नहीं करती और अपने पेट पर घूँसे मारने लगती है। यह दृश्य देखकर दर्शन के माता-पिता घबरा जाते हैं। वे हाथ जोड़कर अपनी बहू से विनती करते हैं—

“बहू, बस करो। यदि हमारी वजह से यह सब हो रहा है, तो हम ही इस घर से चले जाते हैं। तुम यहीं रहो।“

इतने में दर्शन की सास बोल उठती है—

“नहीं, आप लोग क्यों जाएंगे? हम ही चले जाते हैं। आखिर इस घर पर हमारा क्या अधिकार है? तुम्हें क्या पता, मेरे दामाद दर्शन पर कितनी जिम्मेदारियाँ हैं। मैंने अपने बेटे को केवल इसलिए बुलाया था कि दर्शन की गैर-हाज़िरी में वह घर के कामों में हाथ बँटा सके, लेकिन यह भी आपको स्वीकार नहीं हुआ।“

दर्शन अपनी सास की ओर देखकर शांत किंतु दृढ़ स्वर में कहता है—

“माताजी, यदि आपको यहाँ रहना उचित नहीं लगता, तो आप भी जा सकती हैं। मेरे माता-पिता घर के प्रत्येक सदस्य की देखभाल करने में सक्षम हैं।“

इसके बाद वह अपने माता-पिता की ओर मुड़कर कहता है—

“जब मैंने आपको घर का एक कोना दिया है, तो कृपया उसी तक सीमित रहिए। यदि हर व्यक्ति केवल अपने काम से मतलब रखेगा, तो घर में किसी प्रकार का क्लेश नहीं होगा। मैं आप सबके झगड़ों के बीच पागल होता जा रहा हूँ।“

इतना कहकर दर्शन सीधे अपनी प्रयोगशाला में चला जाता है। वहाँ पहुँचकर वह शराब की बोतल उठाता है और पीने लगता है।

रात काफी हो चुकी थी। रात काफ़ी बीत चुकी थी। दर्शन अपनी प्रयोगशाला में थककर बेसुध-सा फ़र्श पर पड़ा था। तभी अचानक एक तीखी घंटी गूँज उठी। यह कोई साधारण घंटी नहीं थी, बल्कि उसकी प्रयोगशाला का आपातकालीन अलार्म था, जिसे केवल अत्यंत आवश्यक परिस्थिति में ही बजाया जाता था।

घंटी की आवाज़ सुनते ही दर्शन घबराकर उठ बैठा। उसने स्वयं को संभाला और तेज़ी से दरवाज़े की ओर भागा।

दरवाज़ा खोलते ही उसने देखा—उसकी माँ बार-बार अलार्म का बटन दबाए जा रही थीं।

दर्शन झुँझलाकर बोला, "माँ! मैंने कितनी बार कहा है कि इस अलार्म को केवल एक बार दबाया जाता है। बार-बार दबाने से कोई लाभ नहीं होता!"

कलावती ने काँपते हाथों से निशा की ओर इशारा करते हुए कहा, "बेटा... बहू को प्रसव-पीड़ा शुरू हो गई है। उसे तुरंत अस्पताल ले चलो।"

दर्शन एक क्षण भी रुका नहीं। वह दौड़कर निशा के पास पहुँचा, उसे अपनी बाँहों में उठाया और तेज़ी से बाहर खड़ी गाड़ी की ओर भागा।

बाहर कृष्ण कुमार पहले से ही गाड़ी का दरवाज़ा खोले खड़े थे।

दर्शन ने निशा को गाड़ी में बैठाया और स्वयं चालक की सीट पर बैठ गया।

कृष्ण कुमार की भी इच्छा थी कि वे साथ चलें, किंतु परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि दर्शन उन्हें साथ नहीं ले जा सका।

गाड़ी तेज़ी से अँधेरे में ओझल हो गई।

घर के द्वार पर खड़े कृष्ण कुमार और कलावती दूर जाती गाड़ी को देखते रहे। उनकी आँखें नम थीं। दोनों अपने मन का दर्द भीतर दबाए खड़े रहे।

पूरी रात कृष्ण कुमार बार-बार दर्शन को फ़ोन करते रहे, परंतु उसने एक भी कॉल नहीं उठाई।

काफ़ी देर बाद दर्शन के एक सहयोगी ने फ़ोन उठाया।

उसने धीमे स्वर में कहा,

“अंकल... अभी स्थिति बहुत नाजुक है। डॉक्टर ने अभी कुछ भी स्पष्ट नहीं कहा है। आप बस प्रार्थना कीजिए।“

अगले दिन अस्पताल के बाहर हर चेहरा चिंता से भरा हुआ था।

ऐसे समय में भी कलावती अपने परिवार को भूखा नहीं देख सकीं। वे रातभर जागने और चिंता में डूबी रहने के बावजूद सबके लिए अपने हाथों से भोजन बनाकर अस्पताल पहुँचीं।

उनके कपड़े अस्त-व्यस्त थे। चेहरे पर रातभर की जागी हुई थकान और आँखों में चिंता साफ़ दिखाई दे रही थी।

उसी समय निशा की माँ ने ताना मारते हुए कहा,

“वाह! मेरी बेटी अंदर मौत और ज़िंदगी के बीच लड़ रही है, और इन्हें खाना बनाने की पड़ी है!”

कलावती ने कोई उत्तर नहीं दिया।

वे चुपचाप एक कोने में खड़ी रहीं।

दर्शन का सहयोगी उनके पास आया। उसने उनके हाथों से टिफ़िन लिया और दर्शन के सामने रख दिया।

दर्शन ने खाने से मना किया, लेकिन सहयोगी ने आग्रहपूर्वक कहा,

“यदि आप टूट गए, तो निशा को कौन संभालेगा?”

आख़िरकार दर्शन ने दो कौर खा लिए।

सहयोगी ने मुस्कुराकर कहा,

“माता जी, आपके हाथों के भोजन में सचमुच माँ का स्वाद है।“

इतना कहकर उसने झुककर कलावती के चरण स्पर्श किए।

उसी समय ऑपरेशन थिएटर का दरवाज़ा खुला।

डॉक्टर बाहर आए और बोले,

“घबराने की कोई बात नहीं। माँ पूरी तरह सुरक्षित हैं। लेकिन बच्ची का समय से पहले जन्म (Premature Delivery) हुआ है। इसलिए उसे कुछ समय तक NICU में रखना होगा।“

समय बीतता गया।

दर्शन अपने जीवन की हर विफलता का दोष धीरेंद्र को देने लगा।

धीरे-धीरे वह अवसाद में डूब गया।

फिर अवसाद ने नशे का रूप ले लिया।

उसकी नौकरी चली गई।

उसके सपने बिखर गए।

उसकी प्रयोगशाला वीरान होने लगी।

घर में रहते हुए भी वह घर से दूर हो चुका था।

उधर उसकी बेटी दो वर्ष की हो चुकी थी।

वह न बोल सकती थी...

न सुन सकती थी...

उसकी मासूम आँखें हर समय अपने माता-पिता को खोजती रहती थीं।

लेकिन उसके पालन-पोषण की पूरी ज़िम्मेदारी कृष्ण कुमार और कलावती ने अपने कंधों पर उठा ली।

एक दिन कृष्ण कुमार और कलावती अपनी पोती को लेकर मंदिर गए।

बच्ची मासूम मुस्कान के साथ खेल रही थी।

धीरे-धीरे शाम रात में बदल गई।

कलावती बार-बार मंदिर के द्वार की ओर देखती रहीं।

शायद उन्हें उम्मीद थी...

कि दर्शन और निशा अपनी बेटी को खोजते हुए वहाँ आएँगे...

शायद उन्हें अपनी भूल का एहसास होगा...

शायद वे अपनी बेटी को सीने से लगा लेंगे...

लेकिन रात बीत गई...

कोई नहीं आया।

कृष्ण कुमार सब समझ चुके थे।

उन्होंने अपनी पोती को गोद में उठाया।

उनके चेहरे पर गहरी उदासी थी।

धीरे-धीरे वे कलावती के पास आए।

उनके काँपते हाथ ने पत्नी के कंधे को छुआ।

बहुत धीमे स्वर में उन्होंने कहा,

“कलावती... अब जिस दिन का तुम इंतज़ार कर रही हो, वह दिन कभी नहीं आएगा। उस घर में अब हमारी कोई जगह नहीं रही। हम वहाँ अपने ही घर में किरायेदार बनकर रह गए हैं... और उस किराए की कीमत हम वर्षों पहले चुका चुके हैं। अब समय आ गया है कि हम वह घर छोड़ दें।“

यह सुनते ही कलावती मंदिर के द्वार से लिपटकर फूट-फूटकर रो पड़ीं।

वे रोते हुए बोलीं,

“हमने तो अपना जीवन जी लिया... जो सुख-दुःख देखने थे, देख लिए... लेकिन इस मासूम बच्ची का क्या दोष है? क्या इसे कभी माँ की ममता और पिता का स्नेह नहीं मिलेगा? क्या इसकी विकलांगता ही इसका अपराध बन गई? क्या इसके अपने ही माता-पिता इसे यूँ ही छोड़ देंगे?”

कृष्ण कुमार ने अपनी पत्नी के आँसू पोंछे।

उन्होंने बच्ची को सीने से लगाया और दृढ़ स्वर में कहा,

“यदि इसके माता-पिता इसका साथ छोड़ चुके हैं, तो क्या हुआ? जब तक मेरी साँस चलेगी, यह बच्ची कभी अनाथ नहीं होगी। मैं अपनी हर साँस, अपनी हर शक्ति और अपना शेष जीवन इसके नाम कर दूँगा। आज इस मंदिर को साक्षी मानकर मैं यह प्रण करता हूँ।“

कृष्ण कुमार और कलावती ने अपनी सोती हुई पोती को सीने से लगा लिया।

तीनों की परछाइयाँ मंदिर की सीढ़ियों से धीरे-धीरे दूर होती चली गईं।

मंदिर की घंटियाँ बजती रहीं...

रात गहराती रही...

और अँधेरे में वे तीनों कहीं खो गए।

उसके बाद किसी को कभी पता नहीं चला कि वे कहाँ चले गए।

जब दर्शन को पता चलता है कि उसके माता-पिता उसकी बेटी को अपने साथ लेकर चले गए हैं, तो उसके मन में गहरा पश्चाताप जाग उठता है। वह अपनी भूल सुधारना चाहता है, किंतु अब उसमें इतना साहस नहीं बचा था कि वह अपने अपराध का प्रायश्चित कर सके।

उसके मन में बार-बार केवल एक ही विचार आता था—

"काश! मैं अपनी वह गलती सुधार पाता। काश! मैं उस समय को मिटा पाता, जिसमें आज जी रहा हूँ।"

उसी पश्चाताप में डूबा हुआ वह अपनी प्रयोगशाला में पहुँचता है। वह नशे की हालत में था। काँपते हाथों से वह समय-यंत्र में 1 जनवरी की तिथि दर्ज करता है और किसी प्रकार मशीन को चालू कर देता है।

लेकिन आगे क्या करना है, यह उसे स्वयं भी समझ नहीं आता। वह घबरा जाता है और कुछ ही क्षणों बाद बेहोश होकर गिर पड़ता है।

काफी समय बाद उसकी आँखें खुलती हैं।

वह स्वयं को एक पार्क में पड़ा हुआ पाता है। उसके कपड़े मैले थे और उसके शरीर से शराब की तीव्र गंध आ रही थी। आसपास के लोग उसे

घृणा की दृष्टि से देख रहे थे और कोई उसे शराबी तो कोई आवारा समझ रहा था।

दर्शन अपनी जेब टटोलता है। उसे एक कागज़ मिलता है, जिस पर समय-यंत्र के कुछ नियम लिखे हुए थे।

होश में आने के बाद भी वह उलझन में था। उसे यह तो समझ आ गया था कि वह अतीत में आ चुका है, किंतु यह समझ नहीं पा रहा था कि वह किस वर्ष में है। आसपास सब कुछ लगभग वैसा ही दिखाई दे रहा था, इसलिए उसकी उलझन और बढ़ गई।

वह पास की बेंच पर बैठे एक व्यक्ति के पास जाता है, जो अख़बार पढ़ रहा था। दर्शन उससे समय और वर्ष के बारे में पूछता है। उसकी अस्त-व्यस्त अवस्था देखकर वह व्यक्ति घबरा जाता है और बिना कुछ कहे वहाँ से हट जाता है।

दर्शन निराश होकर वहाँ से चल पड़ता है। वह अपनी दुर्दशा के लिए स्वयं को ही दोषी मान रहा था।

अचानक उसके कानों में एक परिचित हँसी गूँजती है।

वो सचेत हो जाता है।

उसे ऐसा लगता है, मानो उसने यहवह मुड़कर उस दिशा में देखता है। कुछ कॉलेज के छात्र हँसी-मज़ाक करते हुए उसकी ओर आ रहे थे।

उनमें एक युवक ऐसा था, जिसे देखकर दर्शन स्तब्ध रह गया।

वह कोई और नहीं, बल्कि सन् 2017 का स्वयं दर्शन था।

युवा, आत्मविश्वास से भरा, गठीले शरीर वाला और अपने मित्रों का नेतृत्व करता हुआ।

भविष्य का दर्शन उसे देखकर कुछ क्षणों के लिए अपनी सारी परेशानियाँ भूल जाता है। उसके सामने उसकी अपनी सुनहरी यादें जीवित खड़ी थीं।

उसके मुँह से अनायास निकल पड़ा—

“अरे... यह तो मेरा ही अतीत है।“

वह अपने युवा रूप से बात करना चाहता था, लेकिन अपनी वर्तमान अवस्था देखकर स्वयं को रोक लेता है।

कुछ देर बाद वह चुपके से एक पुराने घर में प्रवेश करता है।

घर के भीतर उसके कदमों की आहट सुनकर नीचे से मकान-मालकिन आवाज़ लगाती हैं—

“कौन है?”

दर्शन तुरंत उत्तर देता है—

“आंटी जी, मैं दर्शन हूँ। सुंदर फिर कुछ भूल गया है। वही लेने आया हूँ।“

आंटी हँसते हुए कहती हैं—

“ये दोनों भाई भी न, बिल्कुल गंवार हैं। ठीक है बेटा, जाते समय दरवाज़ा ठीक से बंद कर देना।“

दर्शन उस घर के कोने-कोने से परिचित था। इसी घर में वह अपने मित्र सुंदर और उसके बड़े भाई चंदन के साथ रहा करता था। चंदन इस समय अपनी नौकरी पर गया हुआ था।

दर्शन चंदन के कपड़े पहन लेता है। कपड़े उसके नाप के नहीं थे, इसलिए वे उस पर ठीक से फिट नहीं आते। कुछ देर बाद उन्हें पहनने से उसके शरीर में खुजली भी होने लगती है।

उधर, सन् 2017 का दर्शन अपने कॉलेज की कैंटीन में आज के समय का दर्शन मुख्य द्वार की ओर टकटकी लगाए किसी का इंतज़ार कर रहा था। वह उस मीठी मुस्कान और चेहरे की ताज़गी का इंतज़ार कर रहा था, जिसके कॉलेज में प्रवेश करते ही उसका पूरा दिन खुशनुमा हो जाता था।

जब भी कोई लड़की कॉलेज में प्रवेश करती, दर्शन अनायास ही उसकी ओर देख लेता। यह उसकी आदत नहीं थी, बल्कि वह किसी विशेष व्यक्ति की तलाश में था। उसकी आँखें केवल उसी एक चेहरे को खोज रही थीं। काफी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद आखिरकार वह लड़की कॉलेज में प्रवेश करती है।

मीरा।

मीरा वही थी, जिसके दर्शन पाने के लिए दर्शन हर दिन व्याकुल रहता था। वह केवल रूप से ही सुंदर नहीं थी, बल्कि विचारों से भी अत्यंत समझदार और परिपक्व थी। उसके व्यक्तित्व में ऐसे अनेक गुण थे, जो आज के समय में बहुत कम देखने को मिलते हैं।

जैसे ही मीरा कॉलेज के भीतर प्रवेश करती है, वह एक क्षण के लिए दर्शन की ओर देखती है। उसके होंठों पर हल्की-सी मुस्कान खिल उठती है। दर्शन भी मुस्कुराकर उसकी ओर देखता है। इसके बाद मीरा अपने कक्षा-कक्ष की ओर बढ़ जाती है।

दर्शन के मित्र यह सब देख रहे होते हैं। वे उसके मन की हर भावना से भली-भाँति परिचित थे। दर्शन भी अपने मित्रों से अलग होकर कक्षा की ओर चल पड़ता है।

कक्षा में प्रवेश करते समय उसके चेहरे पर आत्मविश्वास के साथ-साथ हल्का-सा अहंकार भी झलक रहा था। वह स्वयं को किसी वीर योद्धा और महान ज्ञानी से कम नहीं समझता था। वह इस अंदाज़ में कक्षा में प्रवेश करता, मानो कोई राजा अपने दरबार में प्रवेश कर रहा हो और पूरी प्रजा सम्मान में सिर झुकाकर उसका स्वागत कर रही हो।

दर्शन हमेशा चाहता था कि वह कक्षा का सबसे आकर्षक और सबसे चर्चित विद्यार्थी बना रहे।

कॉलेज में दर्शन की अच्छी प्रतिष्ठा थी। लगभग हर छात्र और शिक्षक उसे जानता था। वह पढ़ाई में अत्यंत मेधावी था और सभी का प्रिय भी।

तभी कॉलेज का सुरक्षा कर्मी उसके पास आता है और कहता है—

“ओए लड़के! तेरा भाई बाहर तेरा इंतज़ार कर रहा है।“

दर्शन बिना ध्यान दिए मुस्कुराकर कहता है—

“मेरा कोई भाई मुझसे मिलने क्यों आएगा? अगर आया भी होगा, तो निश्चित ही मुझसे कोई मदद माँगने आया होगा। उससे कह दो कि इस समय मैं किसी की मदद नहीं कर सकता।“

दर्शन की यह बात सुनकर मीरा उसके आत्मविश्वास से प्रभावित हो जाती है।

उसी समय वह रहस्यमय व्यक्ति, जो वास्तव में भविष्य का दर्शन था, उनके सामने आ खड़ा होता है।

कॉलेज के सभी विद्यार्थी उसे देखकर चकित रह जाते हैं।

उसका चेहरा, कद-काठी और हाव-भाव बिल्कुल दर्शन जैसे थे, बस वह लगभग दस वर्ष अधिक उम्र का दिखाई देता था।

दर्शन आश्चर्य से उसकी ओर देखता है और पूछता है—

“मैं तुम्हें नहीं जानता। तुम कौन हो?”

वह रहस्यमय व्यक्ति धीरे से दर्शन के कान के पास झुककर कहता है—

“तुम्हारा भविष्य।“

यह सुनते ही दर्शन के चेहरे का रंग उड़ जाता है और वह कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह जाता है

दर्शन: “मैं तुम्हारा मतलब समझ नहीं पा रहा हूँ।“

भविष्य का दर्शन शांत स्वर में कहता है—

“आज तुमने पापा के एटीएम से ₹500 निकाले हैं।“

दर्शन बिना किसी झिझक के उत्तर देता है—

“कॉलेज के ज़्यादातर बच्चों को यह बात पता है कि मैं अभी कमाता नहीं हूँ। इसलिए अपने पिता के पैसों से ही खर्च चलाता हूँ। इसमें नया क्या है?”

इतने में उसका मित्र ऋचि पूछता है—

“दर्शन, यह आदमी कौन है?”

दर्शन कंधे उचकाते हुए कहता है—

“मुझे नहीं पता। मैं भी पहली बार इसे देख रहा हूँ।“

इसके बाद दर्शन बार-बार पीछे मुड़कर देखने लगता है कि कहीं वह रहस्यमय व्यक्ति उसका पीछा तो नहीं कर रहा।

वह जल्दी-से-जल्दी मीरा को उसके घर छोड़कर लौट आता है। कुछ दूर जाकर वह एक सुनसान स्थान पर रुक जाता है। तभी भविष्य का दर्शन उसके पास आकर बैठ जाता है।

वह गंभीर स्वर में कहता है—

“मुझे तुम्हारी हर इच्छा, हर भावना और तुम्हारे जीवन के हर पल का अनुभव है, क्योंकि तुम ही मैं हो... और मैं तुम्हारा दस वर्ष आगे का रूप हूँ। मैं वर्ष 2027 से आया हूँ।“

आज का दर्शन अविश्वास से पूछता है—

“मुझे कैसे विश्वास हो कि तुम सचमुच वर्ष 2027 से आए हो?”

भविष्य का दर्शन मुस्कुराकर कहता है—

“यदि तुम्हें विश्वास नहीं है, तो मैं तुम्हें वर्ष 2027 में ले चलता हूँ। वहाँ पहुँचकर तुम्हारा हर संदेह दूर हो जाएगा।“

दर्शन फिर पूछता है—

“अगर तुम सच में भविष्य से आए हो, तो यहाँ क्यों आए हो? मैं तो वर्ष 2017 में अपनी ज़िंदगी से खुश हूँ।“

भविष्य का दर्शन उसकी आँखों में देखते हुए कहता है—

“तुम मुझसे डर रहे हो, है न?”

दर्शन उत्तर देता है—

“जब कोई व्यक्ति किसी अजनबी को समझ नहीं पाता, तो उससे डरना स्वाभाविक ही है। कभी तुम अपने आपको मेरा भाई बताते हो, कभी कहते हो कि वर्ष 2027 से आए हो। आखिर सच क्या है?”

दर्शन उसे शांत रहने का इशारा करता है।

भविष्य का दर्शन गहरी साँस लेकर कहता है—

“मेरी बात ध्यान से सुनो। पहले मुझे पूरी बात कह लेने दो, उसके बाद तुम जो चाहो पूछ लेना।“

कुछ क्षण रुककर वह आगे कहता है—

“आज से ठीक एक सप्ताह बाद तुम एक बहुत बड़ी गलती करने वाले हो। वही गलती हमारे पूरे भविष्य को बर्बाद कर देती है। ‘हमारे’ से मेरा मतलब है—मेरा। क्योंकि जब तुम वर्ष 2027 में पहुँचोगे, तब तुम्हारी भी यही हालत होगी। मैं केवल कुछ पल बदलना चाहता हूँ, ताकि जब तुम भविष्य में पहुँचो, तब तुम्हें एक बेहतर जीवन मिले। लेकिन इसके लिए मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।“

आज का दर्शन मुस्कुराकर कहता है—

“यार, अगर तुम सच में भविष्य से आए हो, तो मुझे कोई ऐसा प्रमाण दो, जिससे मुझे विश्वास हो जाए। अभी तक तो मैं तुम्हारी बात नहीं मान रहा।“

भविष्य का दर्शन कुछ देर सोचने लगता है।

फिर वह थोड़ी झुंझलाहट और बेचैनी के साथ कहता है—

“आख़िर मैं तुम्हें कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैं तुम्हारा ही भविष्य हूँ? मुझे तुम्हारे बारे में वह सब पता है, जो दुनिया में किसी और को नहीं पता।“

वर्तमान का दर्शन तुरंत पूछता है—

“अच्छा, यह बताओ... आज से दस साल बाद मैं कहाँ रहूँगा?”

भविष्य का दर्शन गंभीर होकर उत्तर देता है—

“जहाँ मैं हूँ, दस साल बाद तुम भी वहीं होगे। हम दोनों एक समय-लूप (Time Loop) में फँस चुके हैं।“

वह आगे कहता है—

“यदि इस समय-लूप को नहीं तोड़ा गया, तो हम अनंत काल तक इसी प्रकार मिलते रहेंगे। तुम वर्ष 2027 में पहुँचोगे, अपनी बदहाल ज़िंदगी देखोगे, फिर वर्ष 2017 में लौटोगे और अपने अतीत को समझाने की कोशिश करोगे। यह क्रम बार-बार दोहराया जाएगा और कालचक्र कभी समाप्त नहीं होगा।“

“इससे निकलने का केवल एक ही उपाय है—उस गलती को होने से रोक दिया जाए, जो आज से ठीक एक सप्ताह बाद होने वाली है।“

भविष्य के दर्शन की गंभीरता देखकर वर्तमान का दर्शन हँस पड़ता है।

वह मुस्कुराते हुए कहता है—

“अरे भाई! मुझे पहले से ही अंदाज़ा था कि तुम भविष्य से आए हो। मैंने कई बार सपनों में तुम्हें देखा है। हाँ, बस एक फर्क था—सपनों में तुम इससे भी ज़्यादा बूढ़े दिखाई देते थे।“

“मैं तो केवल तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। लेकिन तुम्हें यह भी पता होगा कि मैंने हाल ही में एक बहुत बड़ा क्लेश खड़ा कर दिया है। क्या तुम्हें मालूम है कि उसका परिणाम मुझे क्या मिलने वाला है?”

यह प्रश्न सुनकर भविष्य का दर्शन कुछ क्षणों के लिए अपने अतीत की स्मृतियों में खो जाता है। उसके चेहरे के बदलते भाव साफ़ बता रहे थे कि वह उस घटना और उसके परिणाम से भली-भाँति परिचित है।

वह हल्की मुस्कान के साथ कहता है—

“चल... मैं तुम्हें बताता हूँ कि उस क्लेश का परिणाम क्या होने वाला है।“

उसी समय उनकी बातें सुनते हुए पीछे से धीरेंद्र भी वहाँ आ पहुँचता है।

वह भविष्य के दर्शन की ओर देखते हुए व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहता है—

“अच्छा! यही है तुम्हारा हमशक्ल?”

फिर वह तंज कसते हुए दर्शन से पूछता है—

“क्या कोई नया षड्यंत्र रच रहे हो?”

दर्शन बात को टालने की कोशिश करता है, लेकिन धीरेंद्र उसके हाव-भाव देखकर सब समझ जाता है। वह मुस्कुराते हुए कहता है—

“हाँ, क्यों नहीं हो सकता? जब एक जैसी शक्ल वाले **सात** लोग हो सकते हैं, तो यह भी संभव है। वैसे इसमें और तुममें कोई खास अंतर तो दिखाई नहीं देता... लेकिन एक बात माननी पड़ेगी, यह शायद तुमसे थोड़ा अधिक समझदार है।“

यह सुनकर वर्तमान का दर्शन तीखे स्वर में कहता है—

“देख, धीरेंद्र! अभी हम दोनों आपस में बात कर रहे हैं। बीच में टाँग अड़ाने की ज़रूरत नहीं है। अपने काम से काम रख। पिछली परीक्षा में भी मैंने तुम्हें हराया था। अब अगली परीक्षा की तैयारी कर, शायद इस बार मुझे हरा सको।“

धीरेंद्र बिना कुछ कहे वहाँ से जाने लगता है।

दर्शन उसके पीछे ऊँची आवाज़ में कहता है—

“हाँ, जा... अच्छी तरह तैयारी कर। कहीं ऐसा न हो कि इस बार भी तुम्हें मुँह की खानी पड़े।“

धीरेंद्र के वहाँ से चले जाने के बाद वर्तमान का दर्शन भविष्य के दर्शन की ओर मुड़कर उत्सुकता से पूछता है—

“अब यह तो बताओ, भविष्य में इस बेवकूफ का क्या हाल होने वाला है?”

भविष्य का दर्शन हल्की मुस्कान के साथ उत्तर देता है—

“इसकी हालत हमसे कहीं बेहतर होने वाली है। मैं इस समय में उसी कारण आया हूँ। मुझे यदि किसी को हराना है, तो वह धीरेंद्र ही है।“

वह कुछ क्षण रुककर आगे कहता है—

“हमारी एक गलती के कारण वही व्यक्ति सही समय पर सही निर्णय ले लेता है। परिणाम यह होता है कि भविष्य में हम उसी के अधीन काम कर रहे होते हैं।“

भविष्य का दर्शन वर्तमान के दर्शन की आँखों में देखते हुए कहता है—

“इसलिए, मेरे भाई... यदि सचमुच धीरेंद्र को हराना चाहते हो, तो तुम्हें मेरी हर बात माननी होगी।

यदि हम धीरेंद्र के व्यक्तित्व पर विचार करें, तो स्पष्ट होता है कि वह समय का सही उपयोग करना जानता था। वह अवसरों को पहचानने और उनका लाभ उठाने में निपुण था।

धीरेंद्र और दर्शन, दोनों के व्यक्तित्व एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न थे। धीरेंद्र समय का अत्यंत पाबंद था। उसे जब भी कोई अवसर मिलता, वह उसे हाथ से जाने नहीं देता था, चाहे उसके मार्ग में कितनी भी कठिनाइयाँ या षड्यंत्र क्यों न रचे गए हों। इसके विपरीत, दर्शन अपने ज्ञान के अहंकार में डूबा रहता था। धीरेंद्र परिस्थितियों और समय के प्रवाह के साथ चलना जानता था, जबकि दर्शन उसी प्रवाह के विपरीत चलने का प्रयास करता था।

यदि हम वर्तमान समय के संदर्भ में भी देखें, तो जो व्यक्ति समय और परिस्थितियों के साथ चलता है, वही उन्नति प्राप्त करता है। इसके विपरीत, जो समय के विरुद्ध चलने का प्रयास करता है, वह अंततः केवल पछतावे का भागी बनता है।

धीरेंद्र अवसरों को पहचानकर स्वयं को प्रत्येक कार्य के योग्य सिद्ध करने का प्रयास करता था। वह स्वयं पर विश्वास रखता था कि वह उस कार्य को कर सकता है, और भविष्य में प्रायः उसे पूरा भी कर देता था। दूसरी ओर, दर्शन सदैव उस आदर्श समय की प्रतीक्षा करता रहता था, जो कभी नहीं आता।

धीरेंद्र इस कहानी का खलनायक नहीं है। वह इस कथा का ऐसा पात्र है, जो भली-भाँति जानता है कि कब, किसके सामने, कितना झुकना है

और कब, किस परिस्थिति में, दृढ़ एवं शक्तिशाली बनकर खड़ा रहना है प्रायः फिल्मों और काल्पनिक कहानियों में यह दिखाया जाता है कि कोई व्यक्ति केवल सत्य बोलकर हर परिस्थिति में विजयी पाता और सुखी रहता है। किंतु वास्तविक जीवन इससे बिल्कुल भिन्न होता है।

धीरेंद्र की एक और विशेषता यह है कि वह अपने लिए स्वयं चुनौतियाँ और विरोधी तैयार करता है। वह ऐसा हारने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए करता है कि प्रत्येक विरोधी से उसे कुछ नया सीखने और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिले। पूरी कहानी में धीरेंद्र शांत, धैर्यवान और संतुलित दिखाई देता है, जबकि दर्शन अपने अहंकार में डूबा हुआ प्रत्येक व्यक्ति को नीचे गिराने की कोशिश करता रहता है। इसके विपरीत, धीरेंद्र पहले दूसरों को ऊपर उठाता है और उसके बाद स्वयं आगे बढ़ता है। इसी कारण उसके द्वारा बनाए गए मार्ग और संबंध अंततः उसकी सफलता की सीढ़ियाँ बन जाते हैं।

यदि आपको सबसे आगे बढ़ना है, तो समय के साथ चलना सीखना होगा ।

वर्तमान का दर्शन भविष्य के दर्शन से पूछता है—

“तुम भी दर्शन हो और मैं भी दर्शन हूँ। ऐसी कौन-सी गलती की थी हमने, जिसे बदलने के लिए तुम अतीत में लौट आए?”

भविष्य का दर्शन कुछ क्षण चुप रहता है। फिर गंभीर स्वर में कहता है—

“देखो, अभी मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बता सकता। समय को अपनी गति से चलने दो। जिस क्षण तुम वह गलती करने वाले होगे, ठीक उसी समय

मैं तुम्हें रोक दूँगा। तुम्हें ज़रा-सी भी भनक नहीं लगेगी कि तुम कौन-सी गलती करने वाले थे।“

वर्तमान का दर्शन हल्की मुस्कान के साथ कहता है—

“ठीक है। यदि तुम्हें यही उचित लगता है, तो मैं तुम्हारी बात मान लेता हूँ। लेकिन एक बात बताओ, तुम रहते कहाँ हो?”

भविष्य का दर्शन फीकी मुस्कान के साथ उत्तर देता है—

“सच कहूँ तो इस समय मेरा कोई ठिकाना नहीं है।“

यह सुनकर वर्तमान का दर्शन तुरंत कहता है—

“तो फिर ऐसा करो, मेरे साथ मेरे घर चलो।“

भविष्य का दर्शन मुस्कुराकर कहता है—

“वैसे देखा जाए, तो वह घर मेरा भी है।“

दोनों हल्का-सा मुस्कुरा देते हैं और साथ-साथ घर की ओर चल पड़ते हैं।

घर

वर्तमान का दर्शन अपनी पुरानी आदत के अनुसार बिना किसी संकोच के सीधे घर के भीतर प्रवेश कर जाता है। किंतु भविष्य का दर्शन दरवाज़े पर ही ठिठक जाता है।

उसके कदम आगे बढ़ ही नहीं रहे थे।

जिस घर में उसने अपना बचपन बिताया था, आज उसी घर में प्रवेश करना उसके लिए सबसे कठिन काम बन गया था।

उसके मन में एक ही प्रश्न बार-बार उठ रहा था—

“मैं अपनी माँ और पिताजी की आँखों में कैसे देखूँ? उन्हें उनके पुराने रूप में देखकर स्वयं को कैसे समझाऊँ कि यही मेरे माता-पिता हैं?”

उसका हृदय तेज़ी से धड़कने लगता है। वर्षों की यादें एक साथ उसकी आँखों के सामने घूमने लगती हैं।

उधर वर्तमान का दर्शन पीछे मुड़कर उसे देखता है और हँसते हुए कहता है—

“अरे भाई! यह अपना ही घर है। फिर किस बात से घबरा रहे हो?”

वर्तमान के दर्शन की यह बात सुनते ही भविष्य का दर्शन कुछ क्षणों के लिए मौन हो जाता है।

उसकी आँखों के सामने अतीत की एक पुरानी स्मृति फिर से जीवित हो उठती है।

कैसे भविष्य जब दर्शन के पिता ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसके पुत्र की पढ़ाई अधूरी न रह जाए, अपना घर तक बेच दिया था, तब वे तीनों अपना घर छोड़कर एक किराए के छोटे-से मकान में रहने को विवश हो गए।

किसी तरह भविष्य का दर्शन उस घर में प्रवेश कर लेता है। भीतर पहुँचकर वह देखता है कि उसकी माँ कपड़े धो रही हैं। जैसे ही वह घर में प्रवेश करता है, उसकी माँ हाथ धोकर उसके लिए भोजन ले आती हैं और उससे अपनत्व भरी बातें करने लगती हैं।

दर्शन अपनी माँ को सामने देखकर भाव-विह्वल हो चुका था। वह बस उनकी बातें सुनना चाहता था। किंतु वर्तमान का बालक दर्शन बीच-बीच

में अपनी माँ को टोक देता था। इससे भविष्य का दर्शन उसे धीरे से समझाता है, "दर्शन, थोड़ा शांत रहो।"

कुछ देर बाद दर्शन की माँ मुस्कुराकर कहती हैं, "बेटा, पता नहीं क्यों, पर तुम मुझे बहुत समझदार लग रहे हो। न जाने क्यों ऐसा महसूस होता है कि अगर दर्शन का कोई बड़ा भाई होता, तो वह बिल्कुल तुम्हारी ही तरह दिखाई देता।"

दर्शन कुछ नहीं कहता। वह केवल मुस्कुराकर उनकी बातों में सहमति जताता रहता है।

इतने में माँ फिर से अपने काम में लग जाती हैं। उनकी परेशानी देखकर भविष्य का दर्शन उनके काम में हाथ बँटाने लगता है। लाख मना करने पर भी वह उनके सारे काम निपटा देता है।

काम समाप्त होने के बाद माँ भावुक होकर कहती हैं, "काश! मेरा तुम्हारी तरह एक और बड़ा बेटा होता।"

यह सुनकर दर्शन का हृदय भर आता है। उसकी आँखों में आँसू छलकने लगते हैं।

धीरे से वह कहता है, "माँ... मेरी तरह तुम्हारा बेटा कभी न हो।"

शाम को दोनों दर्शन कमरे में बैठे गहरे चिंतन-मनन में डूबे थे।

कुछ देर बाद भविष्य का दर्शन बोला, "दर्शन, सब ठीक है, लेकिन मुझे यहाँ से वापस जाने का रास्ता भी बनाना होगा। जब मैं समय में परिवर्तन करूँगा, तब मैं एक पल भी यहाँ नहीं रुक सकूँगा। इसलिए मुझे समय-यंत्र दोबारा बनाना ही होगा।"

वर्तमान का दर्शन उत्साहित होकर बोला, "क्या तुम सचमुच समय-यंत्र बनाओगे? मैं भी तुम्हारी मदद करूँगा।"

भविष्य का दर्शन मुस्कुराया, पर गंभीर स्वर में बोला, "नहीं, दर्शन। तुम इस यंत्र को बनते हुए नहीं देख सकते। यदि तुमने इसे अभी देख लिया, तो संभव है कि भविष्य में तुम स्वयं इसे कभी बना ही न पाओ। समय को अपने स्वाभाविक क्रम में चलने देना ही आवश्यक है। तुम्हें किसी भी परिवर्तन का साक्षी नहीं बनना चाहिए। जब मैं अपना कार्य पूरा करके चला जाऊँगा, तब तुम्हें यह सब केवल एक स्वप्न जैसा याद रहेगा।"

वर्तमान का दर्शन कुछ सोचकर बोला, "बड़े भाई, मेरे सपनों में भी अक्सर एक उम्रदराज़ दर्शन दिखाई देता है। क्या उसका कोई अर्थ है?"

भविष्य का दर्शन उत्तर देता है, "हमारे सपने भविष्य की झलक तो देते हैं, लेकिन वे कभी स्पष्ट नहीं होते। वे पहेली की तरह होते हैं, जिन्हें समझना पड़ता है। इसलिए जब मैं समय-यंत्र बनाऊँगा, तो पूरी कोशिश करूँगा कि तुम उससे दूर रहो। यही हम दोनों के लिए उचित होगा।"

कुछ देर मौन रहने के बाद वर्तमान का दर्शन बोला, "लेकिन बड़े भाई, उस यंत्र को बनाने के लिए बहुत-से उपकरण और मशीनें चाहिए होंगी। हमारे पिताजी इतनी कमाई नहीं करते कि उनका खर्च उठा सकें।"

यह सुनकर दोनों फिर गहरी चिंता में डूब गए।

सबसे बड़ा प्रश्न यही था—समय-यंत्र बनाने के लिए धन कहाँ से आएगा?

अध्याय 3

समय-यंत्र

सन् 2017 में भविष्य के दर्शन के पास समय-यंत्र को दोबारा बनाने के अनेक उपाय थे, पर सबसे बड़ी समस्या धन की थी। उस समय दर्शन के पिता के पास भी इतनी आर्थिक क्षमता नहीं थी कि वे इस परियोजना का खर्च उठा सकें ।

पुनः समय यंत्र ।

काफी देर विचार करने के बाद वर्तमान के दर्शन ने झिझकते हुए कहा, "बड़े भाई, अगर हम लोगों का भविष्य बताना शुरू कर दें, तो शायद कुछ पैसे कमा सकते हैं। आखिर तुम भविष्य से आए हो, इसलिए तुम्हें आने वाली घटनाओं का ज्ञान भी है।"

भविष्य का दर्शन कुछ क्षण सोचता रहा, फिर बोला, "हाँ... यह उपाय काम कर सकता है।"

अगले ही दिन भविष्य का दर्शन एक बाल योगी का वेश धारण करता है। वह चुपचाप एक प्रसिद्ध अभिनेता के विशाल बंगले में पहुँच जाता है।

अचानक उसके सेवकों और सुरक्षा कर्मियों के सामने एक बाल योगी प्रकट होता है। उसे देखकर सभी चकित रह जाते हैं। कुछ लोगों को संदेह होता है कि कहीं यह कोई ठग तो नहीं।

तभी बाल योगी बने दर्शन गंभीर स्वर में उन्हें अपने पास बुलाता है। सुरक्षा कर्मी और सेवक थोड़े घबराए हुए उसके निकट पहुँचते हैं। उनके मन में जिज्ञासा भी थी और संदेह भी—आख़िर यह रहस्यमयी बालक कौन है, और इतनी सुरक्षा के बीच भीतर पहुँचा कैसे?

“तुम लोग मूर्ख हो… नासमझ हो… यही कारण बनोगे इस महान व्यक्ति के पतन का!”

बाल योगी की ऊँची आवाज़ सुनकर अभिनेता का प्रबंधक तुरंत वहाँ पहुँच गया। उसने हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में कहा, “महाराज, कृपया शांत हो जाइए।“

बाल योगी शांत हुआ और गंभीर स्वर में बोला, “आज इसी मार्ग से एक चोर प्रवेश करेगा। वह दिवाकर चौधरी की एक बहुमूल्य वस्तु चुराने का प्रयास करेगा।“

प्रबंधक आश्चर्यचकित होकर बोला, “प्रभु! आपको यह सब कैसे ज्ञात है?”

बाल योगी मुस्कुराया।

“मैं भूत, वर्तमान और भविष्य—तीनों कालों में विचरण करता हूँ। कल मेरा भविष्य का स्वरूप तुमसे मिलने आएगा।“

इतना कहकर वह वहाँ से चला गया।

उस दिन प्रबंधक और उसके लोग पूरी सतर्कता से पहरा देने लगे। कुछ समय बाद ठीक वैसा ही हुआ, जैसा बाल योगी ने कहा था। एक चोर उसी रास्ते से भीतर घुसा और बहुमूल्य वस्तु चुराने का प्रयास करने लगा। परंतु पहले से तैयार सुरक्षा कर्मियों ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया।

अब उन्हें विश्वास हो चुका था कि बाल योगी की भविष्यवाणी सत्य थी।

अगले दिन भविष्य का दर्शन पुनः योगी का वेश धारण कर अभिनेता के विशाल भवन के मुख्य द्वार पर पहुँचा।

जैसे ही प्रबंधक को सूचना मिली कि "भविष्य से आया योगी" पधारा है, उसने आदरपूर्वक उनका स्वागत किया और भीतर ले गया।

दर्शन ने योगी का अभिनय जारी रखा, पर उसे यह अनुमान भी नहीं था कि भीतर वही अभिनेता उपस्थित होगा, जिसके भविष्य की बात वह करने वाला था।

उसने स्वयं को शांत किया।

अभिनेता ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

योगी बोले, "मुझे ज्ञात था कि तुम आने वाले हो।"

अभिनेता ने विनम्रता से पूछा, "महाराज, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

योगी ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे ही भविष्य से आया हूँ। भविष्य में तुम एक भव्य मंदिर का निर्माण कराते हो। उसी मंदिर में एक ऐसा रहस्यमयी द्वार बनता है, जिसके माध्यम से मैं किसी भी काल में आ-जा सकता हूँ। उसी उद्देश्य से मुझे इस समय में भी वैसा ही मंदिर बनवाना है।"

अभिनेता ने बिना किसी संदेह के उनकी बात स्वीकार कर ली।

कुछ क्षण बाद योगी बोले, "आज एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता तुम्हारे पास आएगा। वह तुम्हारे एक मित्र के पास भी जाएगा। तुम दोनों को अलग-अलग फिल्मों का प्रस्ताव मिलेगा, लेकिन तुम दोनों गलत फिल्मों का चयन करोगे।

इसलिए जब मैं कल पुनः आऊँ, तब तुम दूसरी कहानी स्वीकार करना और अपने मित्र से कहना कि वह पहली कहानी चुने। ऐसा करने पर तुम दोनों भविष्य में कहीं अधिक सफलता प्राप्त करोगे।"

इसके बाद दर्शन ने अभिनेता को उसके जीवन की अनेक ऐसी घटनाएँ बताईं, जिनके बारे में स्वयं अभिनेता भी अनजान था।

अब अभिनेता का विश्वास पूर्णतः दृढ़ हो चुका था। प्रसन्न होकर उसने योगी को उस समय के अनुसार पर्याप्त धन भेंट किया।

घर लौटकर जब दोनों दर्शनों ने रुपयों के बंडल देखे, तो उनके चेहरे खुशी से खिल उठे।

भविष्य का दर्शन तुरंत समय-यंत्र के निर्माण में जुट गया। उसने वर्तमान के दर्शन को सख्त निर्देश दिया कि वह निर्माण प्रक्रिया को बिल्कुल न देखे।

"यदि तुमने अभी जान लिया कि समय-यंत्र कैसे बनता है, तो संभव है भविष्य पूरी तरह बदल जाए।"

वर्तमान का दर्शन उसकी बात मान गया।

लेकिन भविष्य का दर्शन यह नहीं समझ पाया कि वह स्वयं अनजाने में समय की धारा को बदल रहा था। अपने अनुभव के कारण उसे विश्वास था कि उसके प्रत्येक निर्णय सही हैं, जबकि वास्तव में वह अनेक नई घटनाओं को जन्म दे रहा था।

धीरे-धीरे उसकी भविष्यवाणियाँ दूर-दूर तक प्रसिद्ध होने लगीं। वह तूफ़ान, आँधी और वर्षा की भी सटीक भविष्यवाणी करने लगा। मौसम वैज्ञानिक भी उसकी ओर ध्यान देने लगे। फिर भी उसने अपना योगी वाला वेश नहीं बदला।

एक दिन उसने एक युवक को आत्महत्या करने से बचा लिया।

उसे लगा कि उसने एक जीवन बचा लिया है।

परंतु नियति का अपना विधान था।

जिस मृत्यु को उसने टाल दिया था, वही मृत्यु किसी और रूप में उसका पीछा करती रही।

समय बीतता गया।

एक दिन एक चमचमाती कार उसके सामने आकर रुकी।

कार से एक सुंदर, गठीले शरीर वाला व्यक्ति उतरा। उसने अत्यधिक शराब पी रखी थी और लड़खड़ाते हुए दर्शन के पास आया।

वह वही अभिनेता था।

उसने हाथ जोड़कर कहा, “महाराज! आपकी कृपा से मेरी फिल्म अपार सफल हुई। आपने जो कहा था, सब सत्य निकला। मैं आपका जीवन भर ऋणी रहूँगा।“

फिर उसने पूछा, “अब आगे मुझे क्या करना चाहिए?”

दर्शन ने चारों ओर देखा।

कार का चालक अपनी सीट पर बैठा हुआ था।

योगी ने गंभीर स्वर में कहा, “आज कार तुम नहीं चलाओगे। तुम्हारा चालक ही गाड़ी चलाएगा।“

अभिनेता ने बिना एक क्षण गँवाए उनकी आज्ञा स्वीकार कर ली।

दोनों अपने-अपने मार्ग पर चल पड़े।

कुछ ही क्षण बीते थे कि पीछे से एक भयंकर धमाका सुनाई दिया।

“धड़ाम!”

हॉर्न लगातार बज रहा था। लोगों की चीखें गूँज उठीं।

वर्तमान का दर्शन घबराकर दुर्घटना की ओर दौड़ने लगा, लेकिन भविष्य के दर्शन ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“रुको... यह घटना पहले भी हो चुकी है। मैंने केवल इतना बदला कि अभिनेता स्वयं गाड़ी नहीं चला रहा था। दुर्घटना फिर भी होनी ही थी।“

वर्तमान का दर्शन क्रोध से बोला, “यदि सब कुछ पहले से तय है, तो फिर हम यहाँ आए ही क्यों?”

भविष्य का दर्शन शांत स्वर में बोला, “कुछ घटनाएँ बदली जा सकती हैं, लेकिन कुछ घटनाएँ समय स्वयं सुरक्षित रखता है। उन्हें रोकने का प्रयास केवल उनके रूप को बदलता है, परिणाम को नहीं।“

“यदि अभिनेता स्वयं गाड़ी चला रहा होता, तो दोष उसी पर आता। लेकिन अब यह आरोप चालक पर जाएगा। वर्षों बाद अभिनेता यह सिद्ध भी कर देगा कि दुर्घटना के समय गाड़ी उसका चालक ही चला रहा था।“

वर्तमान का दर्शन करुण स्वर में बोला, “जो भी हो... हम अभी भी उन लोगों को बचा सकते हैं।“

भविष्य का दर्शन उसके कंधे पर हाथ रखकर शांत स्वर में बोला, “नहीं, दर्शन। यही वह Butterfly Effect है, जिसे हमें जन्म नहीं लेने देना चाहिए।“

“Butterfly Effect का सिद्धांत कहता है कि अतीत में किया गया एक अत्यंत छोटा परिवर्तन भी भविष्य में अत्यंत बड़े परिणाम उत्पन्न कर सकता है। किंतु इस कहानी में यह सिद्धांत पूर्ण रूप से स्वतंत्र नहीं है। यहाँ समय स्वयं को संतुलित करने का प्रयास करता है। यदि कोई परिवर्तन समय-धारा के मूल ढाँचे को प्रभावित करता है, तो समय उसे किसी-न-किसी रूप में पुनः उसी दिशा में ले जाता है। इसलिए कुछ छोटी घटनाएँ बदल सकती हैं, लेकिन वे घटनाएँ जो पूरे समय-चक्र की नींव हैं, अंततः अपने मूल परिणाम तक पहुँच ही जाती हैं।“

वर्तमान का दर्शन विस्मित होकर उसकी ओर देखने लगा।

भविष्य का दर्शन आगे बोला, “क्योंकि मैं Ship of Theseus हूँ... और तुम भी।“

“मैं वही दर्शन हूँ, लेकिन अब पहले वाला दर्शन नहीं हूँ। समय ने मेरे शरीर से अधिक मेरे विचारों को बदल दिया है। मैं उसी Ship of Theseus का जीवित उत्तर हूँ।“

वर्तमान का दर्शन कुछ पूछने ही वाला था कि भविष्य के दर्शन ने उसे धीरे से रोक दिया।

“हम दोनों एक ही अस्तित्व के दो रूप हैं। जैसे समय के साथ किसी जहाज़ का हर तख्ता बदल जाए, फिर भी वह वही जहाज़ कहलाता है, वैसे ही हम भी हैं। तुम मेरे अतीत हो और मैं तुम्हारा भविष्य।

सच तो यह है कि प्रत्येक क्षण हमारा पुराना स्वरूप समाप्त होता रहता है और एक नया स्वरूप जन्म लेता है। हर पल हम अपने अतीत को पीछे छोड़ते हुए वर्तमान से गुजरकर भविष्य की ओर बढ़ते रहते हैं।“

कुछ क्षण मौन छाया रहा।

फिर भविष्य का दर्शन बोला, “इस समय जो कुछ भी घट रहा है, उसका परिणाम अंततः शुभ होगा। मैं भविष्य से आया हूँ, इसलिए जानता हूँ कि जो लोग आज दुख में हैं, समय उन्हें एक दिन सुख भी देगा।

इसलिए याद रखना—हर पीड़ा स्थायी नहीं होती। समय सबसे बड़ा परिवर्तनकर्ता है।“

वर्तमान का दर्शन कहीं जाने के लिए तैयार हो रहा होता है। उधर भविष्य का दर्शन अपनी किसी जटिल समीकरण को हल करने में पूरी तरह डूबा हुआ था। तभी वर्तमान के दर्शन के मन में एक शरारती विचार आता है।

वह मुस्कुराते हुए पूछता है,

“क्या तुम बता सकते हो कि मैं अभी कहाँ जाने वाला हूँ?”

भविष्य का दर्शन अपनी समीकरण से नज़र हटाए बिना कुछ क्षणों के लिए स्मृतियों में खो जाता है। वह अपने अतीत के उसी दिन को याद

करने की कोशिश करता है। फिर वर्तमान के दर्शन की ओर चालाकी भरी मुस्कान के साथ देखकर कहता है,

“सच बताओ... तुम मेले में ही जा रहे हो, है न?”

वर्तमान का दर्शन हल्की हैरानी से पूछता है,

“मेले में? तुम्हें कैसे पता?”

भविष्य का दर्शन शांत स्वर में कहता है,

“आज तुम्हें सूचना मिली है कि मीरा भी मेले में आई हुई है।“

वर्तमान का दर्शन मुस्कुरा देता है।

“हाँ, यह तो सही है। लेकिन उसके बाद क्या होने वाला है? क्या वह भी बता सकते हो?”

भविष्य का दर्शन मुस्कुरा कर कहता है,

“सब कुछ बता दूँगा... लेकिन एक शर्त है। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।“

वर्तमान का दर्शन हार मानने वाले स्वर में कहता है,

“वैसे भी मैं तुम्हें रोक नहीं सकता। तुम्हें तो सब पहले से पता होता है। चलो, साथ चलते हैं।“

दोनों मेले की ओर निकल पड़ते हैं।

रास्ते में उन्हें दर्शन का एक पुराना मित्र दिखाई देता है। वह अभी-अभी एक साइबर कैफ़े से बाहर निकला था। भविष्य का दर्शन उसे देखते ही कहता है,

“जो भी तुम अभी प्रिंट करवाकर लाए हो, उसमें मात्राओं की बहुत-सी अशुद्धियाँ हैं।“

मित्र चौंक जाता है।

“भैया, मैंने ऐसा कुछ भी प्रिंट नहीं करवाया। आपको ऐसा क्यों लगा?”

वर्तमान का दर्शन हँसते हुए कहता है,

“अरे, यह भविष्य देख सकता है। अगर यह कह रहा है, तो ज़रूर तुम कुछ लिखकर लाए हो।“

मित्र थोड़ा झेंपते हुए मुस्कुरा देता है।

“ठीक है... सच बताता हूँ। आज मैं रमा से अपने प्यार का इज़हार करने वाला हूँ।“

यह सुनते ही दोनों दर्शन ज़ोर से हँस पड़ते हैं। वे उसे छेड़ने लगते हैं और उसका मित्र शर्म से लाल हो जाता है।

कुछ देर बाद तीनों मेले में पहुँच जाते हैं। भीड़, रंग-बिरंगी रोशनियाँ, झूलों की आवाज़ें और चारों ओर फैली चहल-पहल पूरे वातावरण को जीवंत बना रही होती है।

अचानक भविष्य का दर्शन चुपचाप उनसे थोड़ा दूर हट जाता है, मानो उसे पता हो कि अब आगे क्या होने वाला है।

उधर दर्शन का मित्र रमा से बातें करते-करते भीड़ में कहीं दूर निकल जाता है। अब वर्तमान का दर्शन अकेला रह जाता है।

कुछ दूरी पर मीरा खड़ी होती है।

दोनों की नज़रें कई बार एक-दूसरे से टकराती हैं। जैसे ही मीरा उसकी ओर देखती, दर्शन तुरंत नज़रें झुका लेता। और जब दर्शन चोरी-छिपे उसे देखता, तभी मीरा हल्की-सी मुस्कान के साथ दूसरी ओर देखने लगती।

उन दोनों के बीच शब्दों से अधिक उनकी खामोशी बातें कर रही थी।

दर्शन के मन में न जाने कितनी बातें उमड़ रही थीं। वह मीरा से बात करना चाहता था, लेकिन समझ नहीं पा रहा था कि बातचीत की शुरुआत किस विषय से करे। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था।

तभी उसकी नज़र दूर खड़े भविष्य के दर्शन पर पड़ती है।

भविष्य का दर्शन हल्की मुस्कान के साथ इशारों-इशारों में अपने हाथ से खाने का संकेत करता है, मानो कह रहा हो—

“अब तो कुछ खिलाओगे भी... या बस एक-दूसरे को देखते ही रहोगे?”

दर्शन के चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। उसे आखिर वह बहाना मिल ही जाता है, जिसकी उसे तलाश थी।

वह धीरे-धीरे मीरा के पास जाता है। कुछ पल दोनों केवल एक-दूसरे को देखते रहते हैं। फिर हिम्मत जुटाकर वह धीमे स्वर में पूछता है,

“मीरा... क्या तुम मेरे साथ कुछ खाओगी?”

मीरा पहले उसकी आँखों में देखती है, फिर अपने होंठों पर हल्की-सी मुस्कान बिखेरते हुए धीरे से सिर हिला देती है।

उसी एक छोटी-सी मुस्कान ने दर्शन के मन में मेले की सारी रोशनियों से भी अधिक उजाला भर दिया।

दोनों धीरे-धीरे चलते हुए मेले के पास बने एक छोटे-से रेस्टोरेंट में पहुँचते हैं। रेस्टोरेंट बहुत भव्य तो नहीं था, लेकिन उसकी सादगी और गर्मजोशी भरा वातावरण दोनों को सहज महसूस करा रहा था।

दर्शन ने मुस्कुराते हुए पूछा, "क्या खाओगी?"

मीरा ने संकोच से कहा, "जो तुम्हें अच्छा लगे।"

दर्शन ने दोनों के लिए चाइनीज़ भोजन मँगवा दिया।

कुछ ही देर में गरमागरम नूडल्स और मंचूरियन उनकी मेज़ पर सज चुके थे।

मीरा पहली बार दर्शन के सामने इस तरह बैठी थी। उसके हाथों में हल्की-सी झिझक थी। वह धीरे-धीरे खाना खाने लगी, मानो हर निवाले के साथ अपनी धड़कनों को भी संभाल रही हो। उसके मन में दर्शन के प्रति उमड़ता प्रेम उसे बार-बार उसकी ओर देखने को विवश कर रहा था, लेकिन जैसे ही उनकी नज़रें मिलतीं, वह मुस्कुराकर अपनी आँखें झुका लेती।

दर्शन भी उसे चुपके-चुपके देख रहा था। उसे लग रहा था कि समय यहीं ठहर जाए। दोनों बहुत कम बोल रहे थे, लेकिन उनकी खामोशी भी अनगिनत बातें कर रही थी।

कुछ देर बाद दर्शन ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम्हारी यह मुस्कान... शायद इस पूरे मेले की सबसे खूबसूरत चीज़ है।"

मीरा का चेहरा हल्की-सी लाज से लाल हो गया। उसने नज़रें झुकाकर धीमे स्वर में कहा, "इतनी भी तारीफ़ मत किया करो... मुझे शर्म आने लगती है।"

दोनों हल्के-हल्के हँस पड़े। उनके बीच का संकोच अब धीरे-धीरे अपनापन बनता जा रहा था।

तभी अचानक रेस्टोरेंट का दरवाज़ा तेज़ी से खुला और मीरा की सहेली रमा घबराई हुई भीतर आ गई।

वह हाँफते हुए बोली, “मीरा! जल्दी चल, हमें अभी घर जाना होगा।“

मीरा घबरा गई।

“क्या हुआ? सब ठीक तो है?”

रमा कुछ कह पाती, उससे पहले दर्शन ने शांत स्वर में पूछा, “आख़िर बात क्या है?”

रमा ने पहली बार ध्यान से दर्शन को देखा। वह आश्चर्य से बोली,

“अरे… तुम यहाँ हो? फिर बाहर तुम्हारे दोस्त के साथ वह आदमी कौन है, जो पाँच-छह लड़कों से लड़ रहा है?”

दर्शन एक पल के लिए चौंक गया। वह बिना कुछ कहे रेस्टोरेंट से बाहर भागा।

बाहर का दृश्य देखकर वह भी स्तब्ध रह गया।

उसका मित्र और भविष्य का दर्शन पाँच-छह दबंग लड़कों से अकेले ही भिड़े हुए थे। चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी। लोग दूर खड़े तमाशा देख रहे थे, लेकिन कोई बीच-बचाव करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

वर्तमान का दर्शन एक क्षण भी नहीं रुका।

“अब मैं भी आ गया हूँ!” कहते हुए वह सीधे लड़ाई में कूद पड़ा।

अब तीनों एक साथ लड़ रहे थे। भविष्य का दर्शन अपने अनुभव और सटीक वारों से विरोधियों को पछाड़ रहा था, वर्तमान का दर्शन पूरे जोश के साथ उनका सामना कर रहा था, जबकि उनका मित्र भी पूरी बहादुरी से डटा हुआ था।

संख्या में कम होने के बावजूद तीनों का साहस और तालमेल ऐसा था कि कुछ ही मिनटों में पाँचों-छहों लड़के उन पर भारी पड़ने के बजाय स्वयं पीछे हटने लगे।

दूर खड़ी मीरा साँस रोके यह सब देख रही थी। उसके चेहरे पर डर साफ़ दिखाई दे रहा था, लेकिन उसके मन में एक ही प्रार्थना थी—

“दर्शन... तुम्हें कुछ नहीं होना चाहिए।“

उस दिन वर्तमान का दर्शन झूमता हुआ घर लौटा। बाहर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी माँ से मिलने की जल्दी में हो, लेकिन उसके कदम बार-बार प्रयोगशाला की ओर बढ़ रहे थे। वह भविष्य के दर्शन को ढूँढ़ रहा था।

भविष्य का दर्शन अपनी प्रयोगशाला में खड़ा था। उसकी आँखों में वर्षों की मेहनत पूरी होने की चमक थी। सामने उसका समय-यंत्र पूरी तरह तैयार खड़ा था।

आज दोनों के चेहरे पर एक अनोखी खुशी थी, क्योंकि वे जिस दिन की वर्षों से प्रतीक्षा कर रहे थे, वह अब आ चुका था।

भविष्य का दर्शन मुस्कुराते हुए बोला,

“छोटे... कल तुम मीरा से मिल लेना। मैं भी उसे आख़िरी बार देखूँगा। अभी ज़्यादा कुछ मत पूछो। बस कल का इंतज़ार करो।“

वर्तमान का दर्शन उसकी बात मान गया।

अगले दिन दर्शन और मीरा मिलने के लिए एक छोटे-से होटल पहुँचे। उन्होंने एक केक मँगाया। दोनों ने एक-दूसरे को केक खिलाया, चेहरे पर थोड़ा-सा केक लगाकर हँसे और लंबे समय तक एक-दूसरे के साथ छोटी-छोटी बातों में खोए रहे। ऐसा लग रहा था मानो समय ने उनके लिए अपनी गति धीमी कर दी हो।

कुछ देर बाद मीरा मुस्कुराकर बोली,

“अब तुम्हें अपने आने वाले डी.आर.डी.ओ. ओलम्पियाड की तैयारी करनी चाहिए। मैं चलती हूँ।“

दर्शन का मन उसे जाने देने का नहीं था। उसने धीरे से मीरा का हाथ थाम लिया और उसे अपनी बाँहों में भर लिया।

उसकी आवाज़ भर्रा गई।

“काश... यह पल कभी समाप्त ही न हो। तुम्हें अपने से दूर जाने देने का मन नहीं करता। जी चाहता है कि तुम्हें हमेशा के लिए अपनी बाँहों में समेट लूँ। तुम जैसे ही मेरी आँखों से ओझल होती हो, तुम्हारी कमी मुझे हर साँस में महसूस होने लगती है। काश वह दिन जल्दी आए, जब तुम और मैं हमेशा-हमेशा के लिए एक हो जाएँ।“

मीरा की आँखें भी नम हो उठीं। उसने हल्की-सी मुस्कान के साथ दर्शन के चेहरे को देखा और बोली,

“दर्शन... हमारे सारे सपने एक दिन ज़रूर पूरे होंगे। तुम और मैं एक होंगे। लेकिन अभी इन छिप-छिपकर मिलने के पलों की अपनी ही मिठास है। इन्हें भी जी लेने दो।“

दर्शन ने उसके माथे को चूम लिया। दोनों कुछ क्षण बिना कुछ कहे एक-दूसरे को देखते रहे। फिर मीरा मुस्कुराते हुए वहाँ से चल पड़ी।

जैसे ही मीरा थोड़ी दूर पहुँची, भविष्य के दर्शन ने अपने चेहरे पर बँधा कपड़ा हटा दिया। अब दोनों दर्शन आमने-सामने खड़े थे। वर्षों बाद स्वयं को सामने देखकर दोनों भावुक हो उठे। वे उत्साह में एक-दूसरे से बातें करने लगे।

उधर सड़क पार करती हुई मीरा ने पीछे से दर्शन की आवाज़ सुनी। उसने पलटकर देखा।

उसकी आँखें विस्मय से फैल गईं।

वहाँ एक नहीं, बल्कि बिल्कुल एक जैसी शक्ल वाले दो दर्शन खड़े थे।

उसके मन में अनगिनत प्रश्न एक साथ उठ खड़े हुए—क्या मेरी आँखें धोखा दे रही हैं? क्या ये दोनों जुड़वाँ हैं? या फिर कोई ऐसा रहस्य है, जिसे मैं अब तक समझ ही नहीं पाई?

वह इन्हीं विचारों में खोई बीच सड़क पर खड़ी रह गई।

उसी क्षण तेज़ रफ़्तार से आती एक कार ने उसे ज़ोरदार टक्कर मार दी।

मीरा कई फ़ीट ऊपर हवा में उछल गई। उसका शरीर दूसरी गाड़ी से टकराया, फिर तीसरी गाड़ी की चपेट में आ गया।

चारों ओर चीख-पुकार मच गई।

दर्शन का हृदय जैसे धड़कना भूल गया।

वह पूरी शक्ति से भागता हुआ मीरा के पास पहुँचा।

मीरा रक्त से लथपथ सड़क पर पड़ी थी। उसकी साँसें टूट रही थीं।

दर्शन घुटनों के बल बैठ गया। उसने काँपते हाथों से मीरा को अपनी गोद में उठा लिया।

उसकी आँखों से आँसू लगातार बह रहे थे।

मीरा ने बड़ी कठिनाई से अपना काँपता हुआ हाथ उठाया। उसकी उँगलियाँ खून से सनी हुई थीं। उसने प्यार से दर्शन के गालों को सहलाया और टूटी हुई साँसों में केवल इतना कहा—

“रोना मत... मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी...”

इतना कहकर उसकी आँखें धीरे-धीरे बंद हो गईं।

उसका हाथ दर्शन के गाल से फिसल गया।

और उसने दर्शन की बाँहों में अंतिम साँस ले ली।

दर्शन की चीख पूरे वातावरण में गूँज उठी।

उधर भविष्य का दर्शन भी यह दृश्य देखकर भीतर से पूरी तरह टूट चुका था। उसकी आँखों से भी आँसू बह रहे थे। उसने स्वयं से कहा,

“मैं तब भी उसे नहीं बचा पाया था... और आज भी नहीं बचा सका।“

उसकी नज़र अपने समय-यंत्र पर पड़ी।

एक पल के लिए उसके मन में विचार आया—

“क्या मैं एक बार फिर समय को बदलने की कोशिश करूँ?”

लेकिन तभी एक नकाबपोश व्यक्ति वहाँ आ पहुँचा।

उसकी नज़र सीधे समय-यंत्र से जुड़ी घड़ी पर थी।

उसने घड़ी छीनने की कोशिश की।

वर्तमान का दर्शन किसी तरह उसे बचाकर भागा, लेकिन नकाबपोश ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। कुछ ही क्षणों में दोनों के बीच भीषण संघर्ष शुरू हो गया।

अपनी अंतिम कोशिश में दर्शन ने घड़ी सक्रिय कर दी।

समय कुछ क्षण पीछे लौट गया।

वह फिर उसी क्षण में पहुँच गया, जब मीरा जीवन और मृत्यु के बीच झूल रही थी।

इस बार दर्शन सावधान था। उसे पता था कि नकाबपोश आने वाला है।

लेकिन नकाबपोश भी पहले से तैयार था। मानो उसने पिछली घटनाओं का पूरा अध्ययन कर लिया हो। इस बार उसने दर्शन की हर चाल का पहले ही अनुमान लगा लिया।

उसी समय किसी रहस्यमयी महिला की आवाज़ उसे निर्देश देने लगी।

निर्देश मिलते ही नकाबपोश ने समय-घड़ी छीन ली और उसे ज़मीन पर पटककर तोड़ दिया।

दर्शन की अंतिम आशा भी उसी क्षण बिखर गई।

वर्तमान का दर्शन मीरा के निर्जीव शरीर के पास बैठा फूट-फूटकर रो रहा था।

वह भविष्य के दर्शन के पैरों में गिर पड़ा और बिलखते हुए बोला,

“जल्दी बताओ... आगे क्या होगा? क्या मीरा बच जाएगी? तुम तो भविष्य जानते हो... कुछ तो कहो... कृपया कुछ तो कहो!”

भविष्य के दर्शन के पास उत्तर था।

लेकिन वह जानता था कि यह सत्य अभी कहना वर्तमान के दर्शन को पूरी तरह तोड़ देगा।

उसके लिए यह पीड़ा और भी गहरी थी, क्योंकि वह इस क्षण को दूसरी बार जी रहा था।

उसने अपने आँसू पोंछे और मन-ही-मन कहा,

“जिसे बदलना चाहता था, उसे तो नहीं बदल पाया... लेकिन शायद अभी भी कुछ ऐसा है जिसे बदल सकता हूँ। अब मेरे पास शोक मनाने का समय नहीं है।“

मीरा की मृत्यु ने वर्तमान के दर्शन को भीतर तक तोड़ दिया था। अभी तो उसके प्रेम की कहानी ने जन्म लिया ही था कि नियति ने उसे उसी क्षण निर्ममता से समाप्त कर दिया। जिस हृदय में प्रेम के मधुर स्वप्न पल रहे थे, उसी हृदय में अब केवल विरह, शून्यता और असहनीय पीड़ा शेष रह गई थी।

मीरा के जाने के बाद दर्शन का जीवन जैसे ठहर-सा गया। उसने खाना-पीना लगभग छोड़ दिया। वह किसी से बात नहीं करता था, न किसी से

मिलता था। दिन-रात वह केवल मीरा की स्मृतियों में खोया रहता। कभी उसकी मुस्कान याद करके रो पड़ता, तो कभी उसकी अंतिम साँसों का दृश्य उसकी आँखों के सामने जीवित हो उठता। उसकी आँखों के आँसू सूख चुके थे, परंतु हृदय का दर्द हर पल और गहरा होता जा रहा था। वह जीवित तो था, किंतु उसके भीतर जीने की इच्छा जैसे समाप्त हो चुकी थी।

उधर भविष्य के दर्शन के सामने भी समय बहुत कम था। वह जानता था कि इतनी अल्प अवधि में दूसरी समय-यंत्र वाली घड़ी बनाना लगभग असंभव था। परिस्थितियाँ उसके विरुद्ध थीं, इसलिए उसे अपने जीवन का सबसे कठिन और सबसे पीड़ादायक निर्णय लेना पड़ा।

उसने यह निश्चय किया कि किसी भी परिस्थिति में वर्तमान के दर्शन की वास्तविक अवस्था संसार के सामने प्रकट नहीं होने देगा। उसने उसके माता-पिता, पड़ोसियों, मित्रों और समाज—किसी को भी इस बात का आभास नहीं होने दिया कि वर्तमान का दर्शन किस असहनीय मानसिक पीड़ा से गुजर रहा है।

जब भी मीरा की दुर्घटना की जाँच के लिए पुलिस घर आती, भविष्य का दर्शन बड़ी सावधानी से वर्तमान के दर्शन को सबसे छिपा देता। वह स्वयं सभी प्रश्नों का उत्तर देता, ताकि किसी को भी किसी प्रकार का संदेह न हो।

इतना ही नहीं, उसने वर्तमान के दर्शन की देखभाल और उपचार का दायित्व भी अपने कंधों पर उठा लिया। समय पर दवाइयाँ देना, उसकी देखरेख करना और उसे जीवन की ओर लौटाने का हर संभव प्रयास करना—यही अब उसका उद्देश्य बन गया था।

भविष्य का दर्शन भली-भाँति जानता था कि शरीर के घाव दवाइयों से भर सकते हैं, परंतु उस हृदय का उपचार किसी औषधि से संभव नहीं, जिसने अपने प्रथम और सच्चे प्रेम को अपनी ही बाँहों में अंतिम साँस लेते देखा हो। उस पीड़ा का कोई उपचार नहीं था—वह केवल समय, स्मृतियों और आँसुओं के साथ जी जाने वाली एक अनंत वेदना थी।

वह स्वयं वर्तमान के दर्शन का जीवन जीने लगा।

अब केवल दो दिन ही शेष बचे थे।

भविष्य का दर्शन वर्तमान के दर्शन का रूप धारण करके कॉलेज जाने लगा। उसने उसी की वेशभूषा, चाल-ढाल और बोलने के तरीके को अपना लिया था, ताकि किसी को भी इस बात का संदेह न हो कि वह वास्तविक दर्शन नहीं है।

वह कॉलेज गया, आवश्यक दस्तावेज़ पूरे किए और नामांकन का फ़ॉर्म भी भर दिया। बाहर से देखने पर सब कुछ सामान्य दिखाई दे रहा था, लेकिन उसके भीतर एक अलग ही युद्ध चल रहा था। एक ओर उसे समय के विरुद्ध लड़ना था, तो दूसरी ओर वर्तमान के दर्शन के टूटे हुए जीवन को संभालना था।

कॉलेज में सभी लोग धीरे-धीरे दर्शन के बदले हुए व्यवहार को महसूस करने लगे थे। उसका शांत स्वभाव, कम बोलना और सबसे दूरी बनाकर रखना कुछ लोगों को अजीब लगने लगा था।

इन सबमें सबसे अधिक परेशान धीरेंद्र था।

धीरेंद्र, जो दर्शन को अच्छी तरह जानता था, उसके व्यवहार में आए इस बदलाव को स्वीकार नहीं कर पा रहा था। उसे लग रहा था कि कुछ न कुछ ऐसा है, जिसे उससे छिपाया जा रहा है।

एक दिन उसने भविष्य के दर्शन का रास्ता रोक लिया।

उसकी आँखों में संदेह साफ़ दिखाई दे रहा था।

धीरेंद्र ने गंभीर स्वर में पूछा,

"एक बात का जवाब सच-सच देना... तुम दर्शन नहीं हो। बताओ, असली दर्शन कहाँ है?"

यह प्रश्न सुनते ही भविष्य के दर्शन के भीतर एक क्षण के लिए हलचल मच गई।

वह जानता था कि धीरेंद्र कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। वह दर्शन को बहुत करीब से जानता है। यदि उसका संदेह बढ़ गया, तो वर्षों की सारी मेहनत और छिपाई हुई सच्चाई सामने आ सकती थी।

एक पल के लिए भविष्य के दर्शन की आँखों में चिंता दिखाई दी, लेकिन उसने स्वयं को तुरंत संभाल लिया।

वह शांत स्वर में बोला,

"धीरेंद्र... पहले एक काम करो। अपना चेहरा ज़रा ढक लो।"

धीरेंद्र उसकी बात सुनकर थोड़ा हैरान हुआ, लेकिन उसने वैसा ही किया।

भविष्य का दर्शन ध्यान से उसे देखने लगा।

वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि कहीं धीरेंद्र वही नकाबपोश तो नहीं, जिसने समय-यंत्र वाली घड़ी छीनने की कोशिश की थी। वह जानता था कि यदि धीरेंद्र ही वह व्यक्ति हुआ, तो आने वाला संघर्ष केवल दो लोगों के बीच नहीं होगा, बल्कि समय और भविष्य को बदलने की लड़ाई बन जाएगा।

लेकिन कुछ क्षणों बाद उसे विश्वास हो गया कि धीरेंद्र वह नकाबपोश नहीं है।

उसने मन ही मन राहत की साँस ली।

फिर भी उसके मन में एक प्रश्न रह गया—

"अगर धीरेंद्र नहीं... तो फिर वह नकाबपोश कौन है? और कौन है जो समय को बदलने से रोकना चाहता है?"

उधर धीरेंद्र भी भविष्य के दर्शन को संदेह भरी नज़रों से देख रहा था।

दोनों के बीच एक अनकहा संघर्ष शुरू हो चुका था।

एक के पास छिपाने के लिए पूरा भविष्य था, और दूसरे के पास सच्चाई जानने की जिद।

आने वाले समय में यह टकराव केवल विश्वास और संदेह का नहीं, बल्कि दो अलग-अलग रहस्यों के बीच होने वाला युद्ध बनने वाला था।लोगों को केवल इतना महसूस हुआ कि दर्शन कुछ बदल-सा गया है। उसके हाव-भाव पहले से अधिक गंभीर हो गए थे। चेहरे पर हल्की दाढ़ी दिखाई देने लगी थी और उसकी बातों में एक अजीब-सी परिपक्वता आ गई थी।

जब भी उसके माता-पिता उससे मिलने आते, वह कमरे का दरवाज़ा बंद रखता और केवल इतना कहता—

“माँ... बस कुछ दिन और। एक बहुत ज़रूरी काम पूरा करना है। उसके बाद सब ठीक हो जाएगा।“

किसी को यह पता नहीं था कि उनके सामने खड़ा दर्शन वास्तव में भविष्य का दर्शन था—एक ऐसा व्यक्ति, जिसने अपने जीवन का सबसे बड़ा प्रेम खो दिया था, लेकिन फिर भी अपनी अंतिम आशा को बचाए रखने के लिए स्वयं का अस्तित्व तक त्याग दिया था।

आज रात एक भद्दी-सी पुरानी गाड़ी दर्शन के घर के सामने आकर रुकती है।

कुछ क्षणों बाद उसी गाड़ी से एक नकाबपोश व्यक्ति बाहर निकलता है। उसके कदमों में एक अजीब-सी दृढ़ता थी, मानो वह किसी निश्चित उद्देश्य से वहाँ आया हो।

वह धीरे-धीरे घर के दरवाज़े तक पहुँचता है और बिना किसी कठिनाई के दरवाज़ा खोल लेता है। इसके बाद वह सीधे दर्शन के कमरे की ओर बढ़ जाता है।

कमरे के अंदर का दृश्य देखकर वह कुछ क्षणों के लिए रुक जाता है। पूरा कमरा अस्त-व्यस्त पड़ा था। सामान इधर-उधर बिखरा हुआ था। कमरे में एक अजीब-सी खामोशी थी।

बिस्तर पर वर्तमान का दर्शन अचेत अवस्था में पड़ा हुआ था। उसकी हालत बहुत खराब थी। भविष्य का दर्शन उसकी देखभाल कर रहा था और उसे दवाइयाँ दे रहा था।

जैसे ही भविष्य के दर्शन की नज़र उस नकाबपोश व्यक्ति पर पड़ती है, वह चौंक जाता है।

नकाबपोश शांत स्वर में कहता है,

"तुम जो कुछ भी कर रहे हो, उसे तुरंत रोक दो। और जिस समय से आए हो, वापस उसी समय में चले जाओ।"

यह सुनते ही भविष्य के दर्शन को एहसास हो जाता है कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है।

उसके मन में एक ही विचार आता है—

"यह कोई और नहीं... धीरेंद्र है।"

वर्तमान का दर्शन भी उस आवाज़ को सुनकर उठने की कोशिश करता है। वह धीरे-धीरे नकाबपोश के पास पहुँचता है और उसका चेहरा देखने के लिए उसका नकाब हटाने का प्रयास करता है।

लेकिन नकाबपोश पहले से तैयार था।

उसने तुरंत अपना हाथ उठाकर दर्शन का हाथ झटक दिया।

परंतु दर्शन भी पीछे हटने वाला नहीं था। उसने फिर से दूसरे हाथ से नकाब हटाने की कोशिश की।

इस बार नकाबपोश ने उसका हाथ पकड़ लिया और पूरी शक्ति से उसे घुमाकर नीचे गिरा दिया।

दर्शन कुछ क्षण के लिए ज़मीन पर पड़ा रहा, फिर तुरंत उठ खड़ा हुआ।

नकाबपोश उसकी ओर देखकर गंभीर स्वर में बोला,

"तुमने पूरी समय-रेखा को बर्बाद कर दिया है। अब मैं तुम्हें वही गलती दोबारा करने की अनुमति नहीं दूँगा।"

दर्शन ने गुस्से और दृढ़ता से उसकी ओर देखा।

"मुझे पता है कि तुम धीरेंद्र हो। शायद अब तुमने भी समय-यंत्र बना लिया है। लेकिन मैं तुमसे पहले यह कर चुका हूँ। अब मैं उस समय में वापस जाऊँगा और वह सब कुछ हासिल करूँगा, जो उस समय मेरा था।"

नकाबपोश हल्की-सी मुस्कान के साथ बोला,

"अच्छा... तुम्हें लगता है कि धीरेंद्र गलत है? लेकिन जिस हालत में तुमने इस बच्चे को पहुँचा दिया है..."

उसने अपना हाथ वर्तमान के दर्शन की ओर बढ़ाया।

"इसका जिम्मेदार कौन है, दर्शन? धीरेंद्र?"

इतना सुनते ही दर्शन के भीतर का क्रोध फूट पड़ा।

वह पूरी शक्ति से नकाबपोश पर हमला कर देता है।

लेकिन नकाबपोश भी इसके लिए तैयार था।

दोनों के बीच भीषण संघर्ष शुरू हो जाता है। दोनों एक-दूसरे को रोकने के लिए अपनी पूरी शारीरिक शक्ति लगा देते हैं। कमरे में रखी वस्तुएँ टूटने लगती हैं और वातावरण तनाव से भर जाता है।

इसी बीच नकाबपोश अपने पास से एक विशेष गैस निकालता है और दर्शन के चेहरे के पास छोड़ देता है।

नकाबपोश ने पहले से सुरक्षा के लिए अपना मास्क पहन रखा था, इसलिए उस गैस का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

लेकिन दर्शन कुछ ही क्षणों में कमजोर पड़ने लगता है और बेहोश होकर गिर जाता है।

नकाबपोश अब बिस्तर पर पड़े भविष्य के दर्शन की ओर बढ़ता है।

वह जानता था कि भविष्य का दर्शन भी गंभीर अवस्था में है और उसे इस हालत में छोड़ना उचित नहीं होगा। वह उसे अस्पताल ले जाना चाहता था।

वह वर्तमान के दर्शन को उठाने का प्रयास करता है, लेकिन उसकी हालत देखकर उसे कठिनाई होती है। फिर भी वह किसी तरह उसे अपने कंधे पर उठा लेता है।

तभी अचानक भविष्य के दर्शन को होश आ जाता है।

वह अपनी पूरी शक्ति जुटाकर उठता है और नकाबपोश की गर्दन में एक रस्सी फँसा देता है।

अचानक हुए इस हमले से नकाबपोश का संतुलन बिगड़ जाता है और वह पीठ के बल ज़मीन पर गिर जाता है।

भविष्य का दर्शन तुरंत उसके पास पहुँचता है और उसका नकाब हटाने में सफल हो जाता है।

नकाब हटते ही कमरे में सन्नाटा छा जाता है।

ज़मीन पर गिरने के कारण वर्तमान के दर्शन को भी होश आ जाता है। वह धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलता है।

लेकिन नकाबपोश का चेहरा देखकर दोनों दर्शन स्तब्ध रह जाते हैं।

जिस सत्य को जानने के लिए वे इतने समय से संघर्ष कर रहे थे, वह अब उनके सामने था।

कमरे का वातावरण अचानक गंभीर हो गया था।

दोनों दर्शन की आँखों में हैरानी, भय और अनगिनत प्रश्न थे।

क्योंकि अब उन्हें समझ आ चुका था कि समय के इस युद्ध में उनका सामना केवल किसी दुश्मन से नहीं, बल्कि एक ऐसे रहस्य से होने वाला है जो उनकी पूरी कहानी बदल सकता था।

नकाब हटते ही कमरे में गहरा सन्नाटा छा गया।

तीनों के मन में एक साथ अनगिनत प्रश्न उमड़ पड़े।

"यह कौन है?"

"यह यहाँ तक पहुँचा कैसे?"

"और यह किस समय से आया है?"

उसी समय वर्तमान का दर्शन भी धीरे-धीरे होश में आया। उसने सामने खड़े नकाबपोश को देखा और काँपती आवाज़ में बोला,

"यही... यही वह व्यक्ति है, जो बार-बार मेरे सपनों में आता था। यह... तुम नहीं थे।"

उसने भविष्य के दर्शन की ओर इशारा किया।

अब सबसे बड़ा प्रश्न यही था—

"आख़िर यह नकाबपोश है कौन?"

नकाबपोश ने वर्तमान के दर्शन की ओर देखा और शांत स्वर में कहा,

"पहले तुम्हें अस्पताल ले चलते हैं। उसके बाद मैं स्वयं बता दूँगा कि मैं कौन हूँ।"

इतना कहते ही उसने अपना परिचय दिया।

वह कोई और नहीं, बल्कि परम भविष्य का दर्शन था—वर्ष 2047 से आया हुआ दर्शन।

अब एक ही समय में तीन दर्शन उपस्थित थे—

वर्तमान का दर्शन — वर्ष 2017

भविष्य का दर्शन — वर्ष 2027

परम भविष्य का दर्शन — वर्ष 2047

यह दृश्य किसी चमत्कार से कम नहीं था।

जैसे ही परम भविष्य का दर्शन वर्तमान के दर्शन को उठाकर अस्पताल ले जाने लगा, भविष्य के दर्शन ने उसका रास्ता रोक लिया।

दृढ़ स्वर में उसने कहा,

"तुम इसे कहीं नहीं ले जा सकते।"

परम भविष्य का दर्शन मुस्कुराया।

"अच्छा... और तुम मुझे रोकोगे कैसे?"

भविष्य का दर्शन उसकी आँखों में देखते हुए बोला,

"मैं तुम्हें अपने किए हुए सब प्रयासों पर पानी नहीं फेरने दूँगा।"

इतना कहते ही उसने परम भविष्य के दर्शन पर प्रहार कर दिया।

दोनों के बीच भीषण संघर्ष आरंभ हो गया।

उसी समय परम भविष्य के दर्शन के कानों में किसी रहस्यमयी स्त्री की आवाज़ गूँजी—

"पहले दर्शन को फेंको!"

आदेश मिलते ही उसने वर्तमान के दर्शन को नीचे की ओर उछाल दिया।

लेकिन यह कोई साधारण वार नहीं था।

उसकी विशेष वैन ने अपने शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र की सहायता से पास से गुजर रही रज़ाइयों से भरी एक गाड़ी को अपनी ओर खींच लिया।

वर्तमान का दर्शन उसी गाड़ी में जा गिरा, जिससे उसकी जान बच गई।

इसके बाद परम भविष्य का दर्शन पूरी शक्ति से भविष्य के दर्शन पर टूट पड़ा।

दोनों के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया।

अनुभव और शक्ति में आगे होने के कारण परम भविष्य का दर्शन धीरे-धीरे भविष्य के दर्शन पर भारी पड़ने लगा। कुछ ही देर में उसने उसे बुरी तरह घायल कर दिया और अंततः उस पर नियंत्रण पा लिया।

इधर घर के बाहर हो रहे इस भयंकर संघर्ष को देखकर दर्शन के माता-पिता घबरा गए।

दर्शन की माँ अपनी छाती पीट-पीटकर रोने लगी।

शोर सुनकर पूरे मोहल्ले के लोग वहाँ इकट्ठा हो गए।

सभी स्तब्ध थे।

एक जैसे चेहरे वाले तीन-तीन युवक...

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि उनमें वास्तविक दर्शन कौन है।

परम भविष्य का दर्शन घायल भविष्य के दर्शन को घसीटते हुए अपनी वैन की ओर ले जाने लगा।

जैसे ही वह वैन के पास पहुँचा, वैन अपने-आप आगे बढ़ने लगी।

वह आश्चर्य से बोला,

"रुको... मैं अभी भीतर नहीं बैठा हूँ।"

उसके इतना कहते ही वैन वहीं रुक गई।

वह भविष्य के दर्शन को वैन के भीतर डालने में सफल हो गया।

फिर स्वयं वैन पर चढ़ा और उसने एक लाल रंग का धुआँ वातावरण में छोड़ दिया।

सभी लोग विस्मय से उस धुएँ को देख रहे थे।

तभी परम भविष्य के दर्शन ने कहा,

"अब... प्रक्रिया शुरू करो।"

अगले ही क्षण वैन के भीतर से भविष्य का दर्शन अचानक गायब हो गया।

वैन के भीतर से एक तीव्र प्रकाश फूटा, जिसने पूरे वातावरण को अपनी चमक से भर दिया।

वह प्रकाश कई सेकंड तक फैलता रहा।

जब प्रकाश शांत हुआ, तो सब कुछ पहले जैसा सामान्य दिखाई देने लगा।

मानो कुछ हुआ ही न हो।

लोग दौड़कर उस गाड़ी तक पहुँचे, जिसमें वर्तमान का दर्शन गिरा था।

उसे नीचे उतारते हुए कोई बोला,

"लगता है यह ऊपर से गिर गया है!"

दर्शन की माँ दौड़ती हुई आईं, उसे सीने से लगाया और तुरंत अस्पताल ले जाने लगीं।

आश्चर्य की बात यह थी कि वहाँ उपस्थित किसी भी व्यक्ति को कुछ क्षण पहले घटी उन असाधारण घटनाओं की कोई स्मृति नहीं थी।

मानो समय ने स्वयं उन पलों को मिटा दिया हो।

सब कुछ ऐसा लग रहा था, जैसे बहते हुए पानी पर कोई निशान बनाया गया हो—जो अगले ही क्षण सदा के लिए विलीन हो जाता है।

भविष्य का दर्शन, जो इस कहानी का मुख्य पात्र था, अब एक अत्याधुनिक समय-परिवहन यंत्र से गुजरते हुए एक विशाल और अत्यंत आधुनिक प्रयोगशाला में आकर गिरता है। यह प्रयोगशाला उसके समय की किसी भी वैज्ञानिक प्रयोगशाला से कहीं अधिक विकसित और उन्नत थी।

समय-यात्रा के तीव्र प्रभाव के कारण उसके सिर में असहनीय दर्द उठ रहा था। उसे तेज़ चक्कर आ रहे थे। वह कुछ क्षण तक अपना सिर पकड़कर वहीं बैठा रहा और स्वयं को संभालने का प्रयास करता रहा।

उधर, प्रयोगशाला के एक कोने में कोई छिपकर उसकी हर गतिविधि पर नज़र रखे हुए था। सामने रखे कंप्यूटर के की-बोर्ड पर उसकी उँगलियाँ बड़ी तेजी से चल रही थीं। वह लगातार कुछ गुप्त संकेत और संख्याएँ दर्ज कर रही थी।

भविष्य का दर्शन धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ। उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई और उस विशाल प्रयोगशाला को समझने का प्रयास करने लगा। वह प्रत्येक विभाग, प्रत्येक मशीन और प्रत्येक उपकरण को ध्यान से देख रहा था, मानो उनकी संरचना को पहचानने की कोशिश कर रहा हो।

तभी उसके कानों में की-बोर्ड की हल्की-सी आवाज़ पड़ी।

वह सावधानी से उस दिशा में बढ़ा। बिना कोई आहट किए वह उस व्यक्ति के पीछे पहुँचा और एक झटके में उसे पकड़ लिया। पास रखी एक धातु की कलम उठाकर उसने उसकी गर्दन के पास रख दी।

कठोर स्वर में उसने पूछा,

"कौन हो तुम?"

वह युवती कुछ नहीं बोली। उसने स्वयं को उसकी पकड़ से छुड़ाने का प्रयास किया, लेकिन भविष्य के दर्शन की पकड़ अत्यंत मजबूत थी।

वह बार-बार केवल एक ही प्रश्न दोहराता रहा—

"बताओ... कौन हो तुम?"

उसी क्षण प्रयोगशाला का मुख्य द्वार खुला।

अंदर परम भविष्य का दर्शन प्रवेश करता है।

वह शांत किंतु दृढ़ स्वर में बोला,

"ठहरो! उसे एक खरोंच भी नहीं आनी चाहिए। यदि उसे चोट पहुँची, तो जीवन भर स्वयं को क्षमा नहीं कर पाओगे।"

भविष्य का दर्शन उसकी बात सुन तो रहा था, लेकिन अभी भी परिस्थितियों को गलत दिशा में समझ रहा था।

उधर वह युवती हाथों के संकेतों से परम भविष्य के दर्शन से पूछती है—

"आप अब तक कहाँ थे?"

परम भविष्य का दर्शन मुस्कुराकर अपने दोनों कान पकड़ लेता है और उससे क्षमा माँगते हुए कहता है,

"मुझे माफ़ कर दो... देर हो गई।"

फिर वह भविष्य के दर्शन की ओर देखकर बोला,

"पहले शांत हो जाओ... यह हमारी भाविका है।"

एक क्षण के लिए समय जैसे ठहर गया।

तीनों एक-दूसरे के चेहरे को देखते रह गए।

भविष्य के दर्शन के भीतर अभी भी प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही थी। उसने युवती की पकड़ और कस दी और कठोर स्वर में पूछा,

"कौन है यह... भाविका?"

परम भविष्य के दर्शन की आँखें नम हो गईं।

वह धीमे स्वर में बोला,

"यह वही बेटी है... जिसे तुमने कभी चाहा नहीं, लेकिन जिसने हमेशा अपने पिता के प्रेम का सपना देखा। यह हमारी बेटी है—भाविका।"

यह सुनते ही भविष्य के दर्शन के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

उसके हाथ स्वतः ढीले पड़ गए।

उसने काँपती नज़रों से भाविका के चेहरे को देखा।

उसकी आँखों में उसे अपनी ही झलक दिखाई दी।

वर्षों का कठोर हृदय एक ही क्षण में पिघल गया।

उसकी आँखों से आँसू बह निकले।

जो हाथ अभी तक उसकी गर्दन पकड़े हुए थे, वही हाथ अब काँपते हुए उसे अपने सीने से लगाने लगे।

वह फूट-फूटकर रो पड़ा।

बार-बार स्वयं को कोसते हुए कहने लगा,

"बेटी... तुम इतनी बड़ी हो गई... और मैं अभागा पिता तुम्हें कभी अपनी गोद में भी नहीं खिला सका। तुम्हारे बचपन की एक भी मुस्कान मेरे हिस्से में नहीं आई। मुझे माफ़ कर दो... मैं तुम्हारा अपराधी हूँ।"

भाविका की आँखें भी भर आईं।

उसने पहली बार अपने उस पिता को देखा था, जिसे उसने केवल कल्पनाओं में महसूस किया था।

वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी और बिना कुछ कहे अपने पिता को गले लगा लिया।

उस आलिंगन में वर्षों का बिछोह, अधूरा प्रेम, पश्चाताप और एक अनकहा अपनापन समा गया।

परम भविष्य का दर्शन यह दृश्य देखकर भावुक हो उठा।

परम-भविष्य का दर्शन भविष्य के दर्शन से कहता है, "मेरे मन में कई ऐसे प्रश्न हैं, जो मुझे लगता है कि तुमसे पूछना आवश्यक है।"

भविष्य का दर्शन मुस्कराते हुए कहता है, "पूछो, तुम्हारे मन में कौन-से प्रश्न हैं?"

2047 का दर्शन कहता है, "गलती हमारी भी थी। हमें तुम्हें किस समय में भेजना था, यह हमने स्पष्ट रूप से लिखकर नहीं दिया। हमने केवल समय-यंत्र बनाने का सूत्र तुम्हें बता दिया। हमें लगा कि तुम अतीत में इसलिए गए हो, ताकि मीरा को दोबारा जीवित कर सको और उसे वापस पा सको। यदि तुम मीरा की मृत्यु टाल देते, तो संभव है कि भाविका का जन्म ही न होता। और यदि भाविका का जन्म न होता, तो यह पूरा समय-चक्र कभी बनता ही नहीं।"

इतने में 2027 का दर्शन उसे बीच में रोकते हुए कहता है, "तुम्हें ऐसा क्यों लगा कि मैं मीरा की मृत्यु रोकने गया था?"

परम-भविष्य का दर्शन आश्चर्य से पूछता है, "तो फिर तुम वहाँ क्या बदलने गए थे?"

2017 का दर्शन गहरी साँस लेते हुए कहता है, "मेरी सबसे बड़ी गलती थी उस ओलंपियाड परीक्षा में भाग न ले पाना। मैं केवल अपने जीवन

के उसी एक क्षण को बदलना चाहता था, जहाँ से मेरी ज़िंदगी एक अलग दिशा ले सकती थी। मैं चाहता था कि 2017 वाला दर्शन वह परीक्षा पास कर ले, ताकि मेरा भविष्य बेहतर बन सके। मुझे नहीं लगता था कि इससे धीरेंद्र या किसी और का भविष्य बदल जाएगा। साथ ही, मैं यह भी जानना चाहता था कि उस समय धीरेंद्र की सहायता करने वाला व्यक्ति आखिर कौन था। यदि मैं वह परीक्षा पास कर लेता, तो मैं धीरेंद्र से बहुत आगे निकल सकता था।"

वह कुछ क्षण रुककर आगे कहता है, "मैं किसी की मृत्यु कैसे रोक सकता हूँ? मैं चाहे जितना प्रयास कर लेता, मीरा को नहीं बचा सकता था। मृत्यु का चक्र समय-यंत्र से भी अधिक शक्तिशाली है। जब मृत्यु का समय आ जाता है, तब समय का चक्र भी उसके सामने असहाय हो जाता है।"

फिर वह अंतिम शब्दों में कहता है, "लेकिन मुझे आज भी सबसे अधिक आश्चर्य इस बात का है कि भाविका ने समय-यंत्र का सूत्र आखिर मेरे पास कैसे पहुँचाया?"

तभी भाविका कंप्यूटर में बाइनरी कोड दर्ज करने लगती है। जैसे ही कोड पूरा होता है, मशीन से उसकी रिकॉर्ड की हुई आवाज़ सुनाई देती है—

"पापा... मैं आपको हर जगह खोजती रही। लोग मुझे हमेशा 'दर्शन की बेटी' कहकर पुकारते थे। जहाँ भी जाती, मुझे कुछ सुनाई नहीं देता था और न ही मैं कुछ बोल पाती थी। लेकिन मुझे हमेशा यह एहसास होता था कि हर जगह आपका ही ज़िक्र हो रहा है। तब मैंने Bootstrap Paradox के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए समय-यंत्र का वही सूत्र अतीत में आपके लिए छोड़ दिया, ताकि समय-चक्र पूरा हो सके।"

उसने धीमे स्वर में कहा,

"तुम्हारे पास अभी भी सब कुछ बदलने का अवसर है... लेकिन मेरे पास नहीं। भाविका ने तुम्हें एक और मौका दिया है। दुर्भाग्य से तुम समय की धारा में स्वयं ही बहुत पीछे चले गए।"

भविष्य का दर्शन आँसू पोंछते हुए बोला,

"क्या... समय-यंत्र हमारी बेटी ने बनाया है?"

परम भविष्य का दर्शन हल्की मुस्कान के साथ उसके सामने एक कुर्सी खींच देता है।

"बैठो... अब तुम्हें बहुत कुछ जानना है।"

भाविका दोनों के लिए चाय लेकर आती है। वह अपने दोनों समयों के पिता के सामने चाय के कप रखती है।

कुछ क्षणों तक तीनों के बीच मौन छाया रहता है।

फिर परम भविष्य का दर्शन गहरी साँस लेकर भविष्य के दर्शन की ओर देखता है और कहता है,

"अब समय आ गया है कि तुम्हें वह सत्य बता दूँ, जिसने हम तीनों का जीवन बदल दिया।"

जब कृष्ण कुमार जी अपनी पत्नी और अपनी पोती भाविका को लेकर वहाँ से चले, तो कुछ दिनों के लिए अपने एक रिश्तेदार के घर ठहर गए। वहाँ के कुछ बच्चे भाविका की शारीरिक विकलांगता का उपहास उड़ाने लगे। उनकी निर्दयी हँसी मासूम भाविका के हृदय को तोड़ रही थी। यह दृश्य उसकी दादी से सहन न हुआ। उन्होंने उन बच्चों को डाँटा, और जब

उनके माता-पिता भी बच्चों का पक्ष लेने लगे, तो वह पूरे साहस के साथ उनके सामने खड़ी हो गईं। उस दिन उन्होंने अपनी पोती के सम्मान के लिए पूरे मोहल्ले से अकेले संघर्ष किया।

उसी समय कृष्ण कुमार जी बैंक का आवश्यक कार्य पूरा करके लौटे। मोहल्ले के लोग और उस घर की मालकिन उन्हें उनकी पत्नी के विरुद्ध भड़काने लगे। सबकी बातें सुनने के बाद वे बिना कुछ कहे अपनी पत्नी के पास पहुँचे।

उन्होंने देखा—उनकी पत्नी घर के एक कोने में बैठी थी। उसने भाविका को अपने सीने से कसकर लगा रखा था। उसकी आँखों में आँसू थे, पर चेहरे पर अपनी पोती की रक्षा करने का संतोष भी था।

यह दृश्य देखकर कृष्ण कुमार जी के मन में एक संकल्प जाग उठा।

"जब मेरी पत्नी अपनी पोती के लिए पूरे मोहल्ले से लड़ सकती है, तो क्या मैं इनके लिए पूरी दुनिया से नहीं लड़ सकता?"

उसी क्षण उन्होंने अपने जीवन की दिशा बदलने का निर्णय ले लिया।

अगले ही दिन वे शहर के प्रसिद्ध शोरूम पहुँचे और अपनी मेहनत की सारी जमा-पूँजी लगाकर एक वैन खरीद ली। उस वैन का नाम उन्होंने बड़े स्नेह से 'सरस्वती' रखा।

अब उनका जीवन केवल एक उद्देश्य के लिए समर्पित था—अपने परिवार का भविष्य सुरक्षित करना।

सुबह बच्चों को विद्यालय पहुँचाना, दिन में लोगों को उनके कार्यालय तक छोड़ना और शाम को उन्हें सुरक्षित घर पहुँचाना—यही उनकी दिनचर्या बन गई। उम्र बढ़ चुकी थी, शरीर अनेक बीमारियों से जूझ रहा

था, फिर भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उन्हें स्वयं को भी बचाना था और अपने परिवार को भी।

एक दिन वे अपनी पत्नी और भाविका को घुमाने ले गए। तभी उनके एक पुराने ग्राहक का फ़ोन आया। वह ग्राहक कृष्ण कुमार जी का बहुत सम्मान करता था। परिवार को सुरक्षित स्थान पर छोड़कर वे तुरंत अपनी ड्यूटी पर निकल पड़े।

उधर दादी और भाविका रात भर उनकी प्रतीक्षा करती रहीं। भाविका तो प्रतीक्षा करते-करते सो गई, किंतु उसकी दादी सारी रात उसके ऊपर से मच्छर उड़ाती रहीं। तभी तेज़ आँधी चलने लगी।

उधर कृष्ण कुमार जी भी उसी आँधी में अपनी सरस्वती को लेकर लौट रहे थे। मौसम इतना विकराल था कि आगे बढ़ना असंभव हो गया। उन्होंने गाड़ी सुरक्षित स्थान पर रोक दी और उसी में रात बिताने का निर्णय लिया। उन्हें विश्वास था कि जब तक सरस्वती उनके साथ है, तब तक हर कठिन रात कट जाएगी।

समय संघर्षों के बीच आगे बढ़ता रहा।

कृष्ण कुमार जी का शरीर बूढ़ा हो चुका था। अनेक बीमारियाँ उन्हें भीतर ही भीतर कमजोर कर रही थीं, लेकिन उन्होंने कभी अपने दर्द को परिवार के सामने प्रकट नहीं होने दिया। वे अपनी हर पीड़ा छिपाकर भाविका का पालन-पोषण करते रहे।

ईश्वर ने भाविका से बहुत कुछ छीन लिया था, पर बदले में उसे एक ऐसी अद्भुत बुद्धि दी थी, जिसका कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता।

वह अपने ज्ञान को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाती थी, लेकिन अपने कार्यों से संसार को दिखा देती थी कि उसके भीतर कैसी विलक्षण प्रतिभा छिपी है।

घर में धन का अभाव था। खिलौने नहीं थे। इसलिए वह सरस्वती के औज़ारों और पुर्ज़ों से खेलते-खेलते मशीनों की भाषा समझने लगी। जब भी गाड़ी खराब होती, कृष्ण कुमार जी और भाविका मिलकर उसे स्वयं ठीक कर लेते। वही गाड़ी धीरे-धीरे भाविका की पहली प्रयोगशाला बन गई।

कभी-कभी कृष्ण कुमार जी अपने बेटे—भविष्य के दर्शन—को भी देखने जाते।

लेकिन अब वह पहले वाला दर्शन नहीं रहा था। मीरा के वियोग ने उसे शराब और नशे की अँधेरी दुनिया में धकेल दिया था। उसे देखकर कृष्ण कुमार जी का हृदय टूट जाता। वे केवल इतना सोचते—

"मेरे बेटे को ऐसा घाव मिला है, जिसका उपचार शायद समय के पास भी नहीं है।"

एक दिन कृष्ण कुमार जी अपनी सरस्वती लेकर सड़क से गुजर रहे थे। गाड़ी में उनकी पत्नी और भाविका भी बैठी थीं। तभी कुछ लापरवाह युवकों ने अपनी तेज़ रफ़्तार कार से उनकी वैन को ज़ोरदार टक्कर मार दी।

दुर्घटना इतनी भीषण थी कि दादी बेहोश हो गईं और भाविका भी घायल हो गई। कृष्ण कुमार जी दोनों को संभालने में लगे थे, जबकि दोषी युवक अपनी गलती स्वीकार करने के बजाय उनसे ही उलझने लगे।

कुछ ही देर में सड़क पर लंबा जाम लग गया।

उसी समय एक सरकारी काफ़िला वहाँ पहुँचा।

काफ़िले से पुलिसकर्मी उतरकर रास्ता साफ़ करने लगे। तभी काफ़िले के मुख्य अधिकारी ने पूछा,

"यह जाम किस कारण लगा है?"

एक पुलिस अधिकारी ने उत्तर दिया,

"सर, एक वैन का गंभीर दुर्घटना हुई है। एक बच्ची घायल है, एक बुज़ुर्ग महिला बेहोश हैं और गाड़ी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी है।"

इतना सुनते ही वह अधिकारी तुरंत गाड़ी से उतरा और घटनास्थल की ओर बढ़ गया।

वह कोई साधारण अधिकारी नहीं था।

वह धीरेंद्र था।

दर्शन के परिवार की यह दशा देखकर उसके कदम वहीं ठिठक गए। उसकी आँखों में अपराधबोध साफ़ झलक रहा था। उसे लगा मानो समय स्वयं उसके सामने खड़ा होकर उससे उसके पुराने निर्णयों का हिसाब माँग रहा हो।

लेकिन धीरेंद्र केवल पछताने वालों में से नहीं था।

उसने बिना एक क्षण गँवाए स्थिति की कमान अपने हाथ में ले ली।

उसने तत्काल एम्बुलेंस बुलवाई, घायलों को अस्पताल पहुँचाया, पुलिस को निष्पक्ष जाँच के निर्देश दिए, दुर्घटना करने वाले युवकों को वहीं

हिरासत में लेने का आदेश दिया और सरस्वती को सुरक्षित मरम्मत के लिए गैराज भेज दिया।

अस्पताल पहुँचकर उसने कृष्ण कुमार जी से दर्शन और पूरे परिवार की कहानी सुनी।

हर शब्द उसके हृदय पर प्रहार कर रहा था।

उसे पहली बार समझ आया कि उसके एक निर्णय ने कितने जीवन बर्बाद कर दिए।

उसी क्षण उसने निश्चय किया कि अब वह केवल कानून का अधिकारी नहीं रहेगा, बल्कि इस परिवार का संरक्षक भी बनेगा।

उसने भाविका की शिक्षा, उसके उपचार, उसके अनुसंधान और उसके भविष्य की संपूर्ण जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। उसने देश के श्रेष्ठ चिकित्सकों, वैज्ञानिकों और शिक्षकों को भाविका की सहायता के लिए जोड़ा। उसके लिए विशेष प्रयोगशाला, आधुनिक उपकरण और शिक्षा की हर सुविधा उपलब्ध कराई।

समय बीतता गया, और धीरेंद्र भाविका के जीवन में एक अभिभावक की तरह खड़ा रहा।

इतनी सारी बातें सुनकर भविष्य का दर्शन पूरी तरह टूट गया। वह भाविका को अपनी बाँहों में भरकर फूट-फूटकर रोने लगा।

परम भविष्य का दर्शन उसके कंधे पर हाथ रखकर बोला,

"मैं भी बहुत रोया था... लेकिन अब तुम्हें अपने आँसुओं को अपनी शक्ति बनाना होगा।"

फिर उसने कहा,

"समय-यंत्र भाविका ने बहुत पहले बना लिया था। उसी ने तुम्हें उसका सूत्र भेजा था, ताकि तुम सही समय में जाकर सब कुछ बदल सको। लेकिन तुम भूलवश वर्ष 2017 में पहुँच गए और समय की धारा बदल बैठे।"

वह कुछ क्षण रुका, फिर गंभीर स्वर में बोला,

"अब तुम्हें अपनी सबसे बड़ी भूल सुधारनी होगी। तुम्हें भाविका के जन्म से पहले लौटना होगा। इस बार उसे माता-पिता, दादा-दादी और पूरे परिवार का भरपूर प्रेम देना। उसे धन, प्रसिद्धि या चमत्कार नहीं चाहिए... उसे केवल अपना परिवार चाहिए।"

उसी समय प्रयोगशाला में लगी एक मशीन से मधुर स्वर सुनाई दिया—

"पापा... आपके लिए समय-पोर्टल कुछ ही क्षणों में खुलने वाला है। कृपया तैयार हो जाइए।"

भविष्य का दर्शन आश्चर्य से उस मशीन की ओर देखने लगा।

उधर भाविका अपने विशेष वाइनरी-कोड के माध्यम से पहली बार अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त कर रही थी।

उसकी आँखों में केवल विज्ञान नहीं था—वहाँ अपने पिता को दूसरा अवसर देने का अटूट विश्वास भी था।

भविष्य का दर्शन (2027) कुछ क्षणों के लिए मौन हो गया। उसके मन में अनेक प्रश्न एक साथ उमड़ने लगे। वह गहरी सोच में डूब गया।

कुछ देर बाद उसने गंभीर स्वर में पूछा,

"यदि मैं अपने वर्ष 2027 में लौट गया, तो क्या होगा? क्या एक दूसरी समय-रेखा बन जाएगी, या फिर यह पूरी समय-रेखा ही समाप्त हो जाएगी?"

उसके प्रश्न के बाद प्रयोगशाला में गहरा सन्नाटा छा गया।

परम भविष्य का दर्शन (2047) और भाविका एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

कुछ क्षणों बाद परम भविष्य का दर्शन बोला,

"हम दूसरी समय-रेखा बनने नहीं दे सकते।"

भविष्य का दर्शन शांत स्वर में बोला,

"तो इसका अर्थ है कि वर्ष 2027 से लेकर आज तक की पूरी समय-रेखा समाप्त हो जाएगी?"

भाविका ने अपनी नम आँखों से उसकी ओर देखा और धीरे से सिर हिलाकर कहा,

"हाँ।"

वर्तमान का दर्शन (2017) यह सुनकर स्तब्ध रह गया।

उसने काँपती आवाज़ में पूछा,

"मतलब... तुम दोनों मर जाओगे?"

परम भविष्य का दर्शन हल्की-सी मुस्कान के साथ बोला,

"नहीं... हम नहीं मरेंगे। मृत्यु केवल शरीर का अंत होती है, समय का नहीं। जिस क्षण से तुम्हें अपना जीवन फिर से आरंभ करना है, उसी क्षण से हमारा अस्तित्व भी नए रूप में आरंभ हो जाएगा।"

वह कुछ पल रुका, फिर आगे बोला,

"समाप्त होगी तो केवल यह समय-रेखा। यह भविष्य, यह वर्तमान और इस समय के साथ जुड़ी सारी घटनाएँ समय की धारा से मिट जाएँगी। लेकिन हमारा अस्तित्व नष्ट नहीं होगा। यदि इस बार तुम कोई भूल नहीं करोगे, तो सब कुछ एक नए और बेहतर भविष्य के रूप में फिर से जन्म लेगा।"

उसने भविष्य के दर्शन के कंधे पर हाथ रखा।

"कभी-कभी तुम्हें ऐसा लगेगा कि यह सब पहले भी घट चुका है। कुछ चेहरे, कुछ स्थान, कुछ क्षण तुम्हें अनजाने में परिचित प्रतीत होंगे। लेकिन तुम उसे केवल 'देजा वू' समझकर अनदेखा कर दोगे। तुम्हें कभी विश्वास भी नहीं होगा कि तुम यह जीवन पहले भी जी चुके हो।"

इतना सुनते ही भविष्य का दर्शन फिर से भाविका के पास गया।

उसने अपनी बेटी को कसकर गले लगा लिया।

उसकी आँखों से आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

वह बार-बार केवल एक ही बात कह रहा था—

"मुझे माफ़ कर देना, बेटी... इस बार मैं तुम्हें कभी अकेला नहीं छोड़ूँगा।"

भाविका भी अपने पिता से लिपटकर रो पड़ी।

उसके लिए यह मिलन जितना अनमोल था, उससे कहीं अधिक पीड़ादायक उसका बिछड़ना था।

यह जानते हुए भी कि यह समय-रेखा कुछ ही क्षणों में समाप्त हो जाएगी, वह अपने पिता को छोड़ना नहीं चाहती थी।

उन दोनों को देखकर वर्तमान का दर्शन भी स्वयं को रोक नहीं सका।

वह आगे बढ़ा और दोनों को अपनी बाँहों में भर लिया।

कुछ क्षणों के लिए तीनों एक-दूसरे से लिपटकर रोते रहे।

वहाँ उपस्थित किसी भी व्यक्ति की आँखें सूखी नहीं थीं।

परम भविष्य का दर्शन ने भी अपनी भावनाओं को बड़ी कठिनाई से नियंत्रित किया।

आख़िरकार उसने स्वयं को संभाला।

वह भविष्य के दर्शन के पास आया, उसका हाथ थामा और बोला,

"अब चलने का समय आ गया है।"

उसने भविष्य के दर्शन को धीरे-धीरे समय-यंत्र की ओर ले जाकर उसके भीतर खड़ा कर दिया।

उसी क्षण भविष्य का दर्शन अचानक रुक गया।

उसने कुछ सोचा।

फिर समय-यंत्र के नियंत्रण-पटल पर जाकर अपने हाथों से समय-निर्देशांक बदल दिए।

परम भविष्य का दर्शन उसकी ओर देखने लगा, लेकिन कुछ नहीं बोला।

उसे विश्वास था कि अब उसका यह रूप कोई स्वार्थपूर्ण निर्णय नहीं लेगा।

समय-यंत्र सक्रिय हो गया।

उसके चारों ओर ऊर्जा का एक चमकदार वृत्त बनने लगा।

धीरे-धीरे उसका शरीर प्रकाश में विलीन होने लगा।

समय की शक्तिशाली तरंगें उसे अपनी ओर खींचने लगीं।

समय-यंत्र में समाते हुए उसने आख़िरी बार पीछे मुड़कर देखा।

उसकी नज़र केवल भाविका पर ठहर गई।

भाविका की आँखों से आँसू लगातार बह रहे थे।

वह मुस्कुराने का प्रयास कर रही थी, ताकि उसके पिता विदा होते समय टूट न जाएँ।

भविष्य का दर्शन भी उसे देखता रहा।

उसकी आँखों में एक पिता का अधूरा प्रेम, एक जीवन का पश्चाताप और दूसरे अवसर की आशा एक साथ झलक रही थी।

अगले ही क्षण समय-यंत्र की प्रकाश-तरंगों ने उसे पूरी तरह अपने भीतर समेट लिया।

और वह समय की अनंत धारा में विलीन हो गया।

अंतिम अध्याय

पुनः — वर्ष 2027

दर्शन की अचानक आँख खुलती है।

वह घबराकर गहरी-गहरी साँसें लेने लगता है। कुछ क्षणों तक उसे समझ ही नहीं आता कि जो कुछ उसने अभी-अभी देखा, वह एक सपना था या सच।

वह अपने चारों ओर नज़र दौड़ाता है।

सब कुछ सामान्य था।

उसकी पत्नी रसोई में भोजन बना रही थी। घर में वही अपनापन, वही शांति और वही जीवन था, जिसकी उसने वर्षों तक केवल कल्पना की थी।

दर्शन बिना कुछ कहे रसोई में पहुँचा और अपनी पत्नी से बोला,

“माँ जी को उनके घर छोड़ने का समय आ गया है। मैं उन्हें अभी छोड़कर आता हूँ।“

उसकी पत्नी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा, लेकिन बिना कुछ पूछे मुस्कुराकर सहमति में सिर हिला दिया।

दर्शन ने अपनी सास को आदरपूर्वक गाड़ी में बैठाया और उन्हें उनके घर छोड़ आया।

लेकिन लौटते समय वह सीधे घर नहीं गया।

उसने गाड़ी मंदिर की दिशा में मोड़ दी।

उसकी आँखों में एक ही बेचैनी थी।

उसे अपने माता-पिता से मिलना था।

सूर्यास्त होने में अब अधिक समय नहीं बचा था।

दर्शन तेज़ी से मंदिर की ओर दौड़ पड़ा।

सभी बाधाओं को पार करते हुए वह मंदिर के प्रांगण में पहुँचा।

मंदिर के द्वार पर उसकी माँ खड़ी थीं।

जैसे ही उनकी नज़र दर्शन पर पड़ी, उनकी आँखें भर आईं। उन्होंने अपनी साड़ी के पल्लू से आँसू पोंछे।

दर्शन दौड़कर उनसे लिपट गया।

वर्षों का बिछोह, पश्चाताप और प्रेम—सब आँसुओं के रूप में बह निकला।

मंदिर के भीतर उसके पिता एक कोने में बैठकर भूख मिटाने के लिए बिस्कुट खा रहे थे।

उन्होंने दर्शन की आवाज़ सुनी, तो हाथ में पकड़ा बिस्कुट एक ओर रख दिया और धीरे-धीरे खड़े हो गए।

उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उनका बेटा सचमुच लौट आया है।

दर्शन अपनी माँ के साथ भीतर गया और अपने पिता के चरणों में झुक गया।

तभी उसकी नज़र एक नन्ही बच्ची पर पड़ी।

वह उसे देखते ही भाव-विभोर हो उठा।

उसने काँपती आवाज़ में पूछा,

“पिताजी... इसका क्या नाम रखा है?”

कृष्ण कुमार जी मुस्कुराए।

उनकी आँखों में गर्व झलक रहा था।

उन्होंने उत्तर दिया,

“भाविका।“

यह नाम सुनते ही दर्शन की आँखें फिर भर आईं।

उसने भाविका को अपनी गोद में उठा लिया और उसे सीने से लगा लिया।

इस बार उसके चेहरे पर आँसू थे, लेकिन उनमें दुःख नहीं, बल्कि संतोष था।

अब सब कुछ बदल चुका था।

समय ने अपनी टूटी हुई धारा को फिर से जोड़ दिया था।

कुछ दिनों बाद जीवन पूरी तरह सामान्य हो गया।

दर्शन अपने परिवार के साथ प्रसन्न था।

भाविका उसकी गोद में बैठी खिलखिला रही थी।

लेकिन तभी उसके मन में एक पुराना प्रश्न फिर जाग उठा।

“वर्ष 2017 के ओलम्पियाड में मेरी सहायता किसने की थी?”

वह इस रहस्य का उत्तर जानना चाहता था।

दर्शन ने भाविका को उसकी माँ की गोद में सौंपा और अपनी प्रयोगशाला की ओर बढ़ गया।

वहाँ पहुँचकर उसने अपना छोटा समय-यंत्र पुनः सक्रिय किया।

कुछ ही क्षणों में समय-पोर्टल खुल गया।

दर्शन उसमें प्रवेश कर सीधे वर्ष 2017 के उस दिन पहुँच गया, जिस दिन ओलम्पियाड प्रतियोगिता होने वाली थी।

विश्वविद्यालय के बाहर विद्यार्थियों की भारी भीड़ लगी हुई थी।

दर्शन भीड़ से दूर खड़ा होकर सब कुछ ध्यान से देखने लगा।

तभी उसने अपने पुराने मित्रों का एक समूह देखा।

उनमें से एक लड़का हँसते-मुस्कुराते हुए अपने साथियों के पास आया और बोला,

“देखो! धीरेंद्र की गाइड मुझे बाथरूम के एक कोने में छिपी हुई मिल गई। बेचारा इस बार पक्का फेल होगा। जब हमारा दोस्त दर्शन नहीं जीत सकता, तो हम धीरेंद्र को भी नहीं जीतने देंगे।“

यह सुनकर सभी ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

दर्शन दूर खड़ा यह सब देख रहा था।

उसके होंठों पर हल्की-सी मुस्कान आ गई।

उसे समझ आने लगा कि उस दिन वास्तव में हुआ क्या था।

कुछ ही क्षण बाद धीरेंद्र घबराया हुआ बाहर निकला।

उसके चेहरे पर चिंता साफ़ दिखाई दे रही थी।

वह हर छात्र से विनती कर रहा था—

“क्या किसी ने मेरी गाइड देखी है? अगर किसी के पास अतिरिक्त प्रति हो, तो कृपया मुझे दे दीजिए।“

लेकिन वहाँ उपस्थित किसी ने भी उसकी सहायता नहीं की।

हर ओर से उसे केवल उपेक्षा ही मिली।

दर्शन यह दृश्य चुपचाप देखता रहा।

धीरेंद्र की विवशता देखकर उसका हृदय पिघल गया।

उसे समझ आ गया कि यदि आज उसने सहायता नहीं की, तो इतिहास फिर वही गलती दोहराएगा।

उसने पास पड़ी एक पुरानी कंबल उठाई, अपना चेहरा ढक लिया ताकि कोई उसे पहचान न सके, और धीरे-धीरे धीरेंद्र के पास पहुँचा।

फिर बिना कुछ कहे उसने अपनी अतिरिक्त गाइड और आवश्यक सामग्री धीरेंद्र के हाथ में रख दी।

धीरेंद्र ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

“आप… कौन हैं?”

दर्शन केवल हल्का-सा मुस्कुराया।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

वह मुड़ा और भीड़ में खो गया।

धीरेंद्र देर तक उसी दिशा में देखता रह गया।

उधर दर्शन के चेहरे पर संतोष की मुस्कान थी।

आज उसे अपने सबसे पुराने प्रश्न का उत्तर मिल चुका था।

समय का चक्र पूर्ण हो चुका था।

जिस रहस्यमय व्यक्ति को वह वर्षों से खोज रहा था...

वह कोई और नहीं, स्वयं वही था।

उपसंहार
कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है...

कहानी यहीं समाप्त नहीं होती।

आइए, एक बार फिर वर्ष 2047 में चलते हैं।

भविष्य का दर्शन (2027) समय-यंत्र में प्रवेश कर अपनी समय-यात्रा पर निकल चुका था। प्रयोगशाला में कुछ क्षणों तक गहरा सन्नाटा छाया रहा।

तभी तभी जब 2027 का दर्शन अपने समय में चला जाता है उसकी कुछ अनुभव धीरेंद्र अपने कमरे से निकलता है धीरेंद्र भी वही था और वह सब कुछ देख रहा था और सोच भी रहा था ' ।

भाविका से लेकर अब तक का समय रेखा नष्ट करने का कोर्ड अपने कंप्यूटर में डाल चुकी होती है । अब टाइमर शुरू हो जाता है अब कुछ ही समय में गैस है समय रेखा विलुप्त हो जाएगी । मगर अचानक से न जाने कहां से एक और मुसीबत इस समय यंत्र से निकलती हुई नजर आ रही होती है । मगर अब जो उसे समय यंत्र से आ गया है वह बिल्कुल भी शांत नहीं बैठने वाला था । वह परम भविष्य से ही लड़ने के लिए आया हुआ था ' । वह परम दर्शन को हीअपने समय में उथल-पुथल वह मीरा

की मृत्यु का स्रोत मानता था । वह था 2017 का दर्शन !क्योंकि 2027 के दर्शन में 2017 में समय यंत्र का फार्मूला वहीं छोड़ दिया था । और वह समय यंत्रजो टूट गई थी वह भी वहीं पर था । उसने उनकी मरम्मत कर भविष्य में आने का कष्ट किया । 2017 का दर्शन 2047 के दर्शन को बहुत बुरी तरीके से मार रहा होता है । और यह समय रेखा खत्म होने वाली होती है । तभी धीरेंद्र भाविका से इस कोड वर्ड में बात करता है । अगर यह इस समय रेखा के साथ खत्म हो गया तो तुम्हारा भी कोई वजूद ही नहीं होगा । । तो वह सदा सदा के लिए 2017 से भी अब तक के लिए मिट जाएगा । तू भविका कहती है तो फिर इसे कैसे रोका जाए । दोनों इस दुविधा में उलझे हुए थे वहीं 2017 का दर्शन परम भविष्य के दर्शन को मारे जा रहा था । और अब कुछ ही छण बचाने वाले थे जब वह समय रेखा खत्म होने की कगार पर आने वाला था । फिर दोनों की लड़ाई में धीरेंद्र भी कूद जाता है !दर्शन उसे बेहद नफरत करता है । मगर दर्शन को नहीं पता था कि केंद्र हमेशा उसे ताकतवर ही था ' । धीरेंद्र परम भविष्य के दर्शन से कहताहै । मुझे मेरा कोई पर्सनल दुश्मनी तुमसे नहीं होगा । मगर मैं इसे बहुत अच्छे ढंग से मारूंगा । मैं 2017 के दर्शन को पकड़ता है और जमीन पर उठाकर पटक देता है । और उसे वही धुआँ सुना देता है जिससे बेहोश हो चुका है ' । आप उसे समय रेखा के अंत होते होते वापस उसे पोर्टल में फेंक दिया जाता है ' । उसकी पोर्टल में गिरते ही पहले भाविका विलिन हो जाती है । फिर दर्शन । अंत में धीरेंद्र भी विलीन हो जाता है ।फिर...

चारों ओर केवल अंधकार रह गया।

न कोई प्रयोगशाला।

न कोई समय-पोर्टल।

न कोई संघर्ष।

न कोई स्मृति।

मानो वह समय-रेखा कभी अस्तित्व में आई ही न हो।

और उसी अंधकार के साथ उस समय का अंतिम अध्याय भी सदा के लिए समाप्त हो गया ।

लेखक की ओर से

अब तक आपने जो कहानी पढ़ी है, उसमें समय की एक अत्यंत पेचीदा धारा को प्रस्तुत किया गया है। पहली नज़र में ऐसा प्रतीत होता है कि कहानी का मुख्य सूत्रधार वह पात्र है, जो अपने अतीत में जाकर केवल एक छोटी-सी गलती को सुधारना चाहता है। ऐसा लगता है मानो उसी के निर्णयों से पूरी कहानी प्रारंभ होती है और उसी पर समाप्त होगी।

किन्तु वास्तविकता इससे बिल्कुल भिन्न है।

इस कहानी की शुरुआत वर्ष 2017 से नहीं, बल्कि 2027 से होती है। आप इस कथा में अतीत से भविष्य की ओर यात्रा नहीं कर रहे हैं, बल्कि भविष्य से अतीत की ओर लौट रहे हैं। अर्थात जिस घटना को आप कहानी का आरंभ समझ रहे हैं, वही वास्तव में उसके अंत की भूमिका है।

इस समय-चक्र का वास्तविक आरंभ भाविका से होता है। जब वह समय-यंत्र का निर्माण कर लेती है, तब वह अपने पिता को एक संदेश भेजती है—

“क्या आप मुझे दोबारा जन्म लेने देंगे? और इस बार मुझे अपंग पैदा नहीं होने देंगे, ताकि मैं भी आपका पूरा स्नेह और अपनापन पा सकूँ?”

उधर 2027 का दर्शन अपनी कुछ दूसरी भूलों को जीवन की सबसे बड़ी त्रुटियाँ मानता है। इस प्रकार पिता और पुत्री—दोनों अपनी-अपनी अतीत की गलतियों को बदलने के लिए समय-यंत्र का उपयोग करते हैं।

लेकिन यही वह क्षण है, जहाँ समय अपनी मूल धारा से विचलित हो जाता है।

भाविका के इस एक निर्णय से 2027 और 2047 के बीच एक नई समय-रेखा (Timeline) जन्म लेती है। यह समय-रेखा इतनी जटिल है कि उसे केवल धीरेंद्र ही समझ पाता है।

इसी कारण कहानी के अंत में, जब 2017 का दर्शन वहाँ पहुँचता है, तब धीरेंद्र भाविका से कहता है—

“इसे वापस वर्ष 2017 में भेज दो। इसके मन में जितने कम प्रश्न उठेंगे, समय के लिए उतना ही अच्छा होगा। यदि कुछ याद भी रहेगा, तो वह उसे केवल ‘देजा वू’ (Dèjá vu) समझकर भूल जाएगा।“

यहीं इस कहानी का सबसे बड़ा रहस्य छिपा है—जिसे पाठक शुरुआत समझता है, वही वास्तव में अंत है; और जिसे अंत समझता है, उसी से पूरी कहानी का वास्तविक आरंभ होता है।